चतुर्थ अध्याय

"शहर में घूमता आईना" में चरित्र-चित्रण

"शहर में घूमता आईना" उपन्यास में परिवेश - चित्रण

उपन्यास में परिवेश-चित्रण का महत्व —

उपन्यास में कथानक का महत्व जो भी हो, किन्तु यह सर्व मान्य है कि कथानक संगठन का प्रधान उद्देश्य परिवेश-चित्रण हैं। इसी कारण परिवेश-चित्रण उपन्यास का प्राण कहा जाता हैं। अनेक विद्वानों के अनुसार यदि उपन्यास में परिवेश-चित्रण सफल हुआ है, तो उनका स्वस्थ संगठन आवश्यक नहीं है। शिथिल रहने पर भी वह प्रभावोत्पादक सिध्द हो सकता हैं। उपन्यास का मूलाधार परिवेश-चित्रण ही है। उपन्यास की घटनाएँ तो प्रायः पात्रों के स्वभाव और प्रकृति से ही प्रसूत होती हैं। उसके वातावरण या देशकाल का निर्माण परिवेशों को स्वाभाविकता और वास्तविकता प्रधान करने के लिए ही किया जाता हैं। कथोपकथन घटनाओं से अधिक परिवेश को ही प्रकाशित करते हैं। मनोविज्ञान को साहित्य में जो भी महत्व मिला है, उसका आधार भी परिवेश-चित्रण ही है।

उपन्यास में परिवेश-चित्रण को ही महत्व दिया जाता हैं। इसमें कुछ विद्वानों में मत-भेद हैं। उपन्यास लेखन के समय जो सर्वप्रथम समस्या उठती है, वह यह कि उसमें परिवेश पहले आना चाहिए या कथानक। कुछ विद्वानों का मत हैं कि लेखक पहले कथानक का संयोजन करता है और पात्रों की प्रतिष्ठा बाद में। तो कुछ विद्वानों का मत है कि लेखक के मस्तिष्क में पहले किसी व्यक्ति का या व्यक्तियों के समूह का चित्र आता है, जिन्हें वह किसी विशिष्ठ व्यवहार एवं आचरण के अनुकूल पाता है और फिर वह अपने इन मन-पसंद परिवेशों की आत्मकथा लिखता हैं। उपर्युक्त दोनों कथनों में तथ्यात्मकता आवश्य है, किन्तु हम इस बात से असहमत नहीं हो सकते कि कथानक और परिवेश दोनों का अन्योन्याश्रित संबंध हैं। जिसे प्रकार आत्मा और शरीर हैं।

उपन्यास में चरित्र-चित्रण का योगदान —

आज समाज में जिस तरह के अनाचार और अत्याचार, शोषण, गुण्डा-गर्दी, सबल को निर्बल पर दबाव आदि-आदि बातों, के और आम आदमी खुले आम संघर्ष करने के लिए असमर्थ हैं। जब इस अत्याचारों की ओर आवाज उठानी होती है, तब कोई लेखक अपने उपन्यास में ऐसा चरित्र उत्पन्न करता है जो इस सब की ओर उसी चरित्र के माध्यम से आवाज उठाता है, और समाज को एक नयी दिशा देता है। जैसे सामाजिक धार्मिक, आर्थिक, राजनीतिक आदि समस्याओं की ओर लेखक चरित्र (नायक) के माध्यम से अपनी मन की आग ओकता हैं।

१) सामाजिक —

समाज में एक नहीं अनेक समस्या हैं। जात-पाँत, ऊँच-नीच का भेद-भाव, सबल-निर्बल, गुण्डा-गर्दी, नीति-अनीति, अशिक्षा, अंधश्रध्दा आदि की ओर लेखक किसी चरित्र का निर्माण करके ही इसी समस्या की ओर सबका ध्यान आकर्षित करता करने में समर्थ होता हैं। खुले आम कोई भी व्यक्ति इसी ओर आवाज उठाने में असमर्थ है।

२) धार्मिक —

धर्म के नाम पर आदिकाल से ही अत्याचार होते आ रहे हैं। समाज के ऊँचे ठेकेदार धर्म के नाम पर अनेक प्रकार के अनाचार करते आ रहे हैं। जैसे देव-दासी प्रथा। निम्न जाति के लोगों की लडकियों को बचपन में ही उसका ब्याह किसी देवी-देवताओं से करवाके उस लडकी को छोड़ा जाता था और बाद में जब वह जवान होती तो ये समाज के ठेकेदार उस देव-दासी का उपभोग करते थे।

३) राजनीतिक —

राजनीति में भ्रष्टाचार, शोषण, रिश्वतखोरी, लूट-पाट का राज होता हैं। नताओं और उनके मातहतों की मन-मानी चलती हैं।

इन सभी के और लेखक अपने साहित्य में कोई ऐसा चरित्र उत्पन्न करता है जो इन सभी की ओर आवाज उठाकर सभी अत्याचारों का खात्मा करें।

उपन्यास में चरित्र-चित्रण की प्रणालियाँ --

उपन्यासकार की सफलता उसके चरित्र-चित्रण पर निर्भर है और चरित्र-चित्रण की सफलता इस बात पर केन्द्रित है कि उसके पात्र कहाँ तक सजीव-साकार रूप प्राप्त कर पाये हैं। पात्रों को सजीव और यथार्थ बनाने के लिए उपन्यासकार की कल्पनाशक्ति, मानव मन की सूक्ष्म - पर्यावलोकन - शक्ति और उसकी कलात्मक योजना की परिक्षा होती है। चरित्र-चित्रण इस ढंग से किया जाय कि जीते-जागते लोगों के भाँति लगे। पाठक उनके सुख-दु:ख का साथी बन ऐसा महसूस करें कि वह जीवित लोगों के संसार में जा पहुँचे।

चरित्र-चित्रण की प्रमुख रूपसे दो प्रणाली है -- १) विश्लेषणात्मक प्रणाली, २) नाटकिय प्रणाली।

१) विश्लेषणात्मक प्रणाली --

विश्लेषणात्मक प्रणाली में लेखक एक द्रष्टा के भाँति चरित्रों के भाव-प्रवृत्ति विचार, एवं भावनाओं को व्यक्त करता है। कभी-कभी उनके संबंध में अपना अधिकार-युक्त निर्णय भी दे देता है। इस प्रकार का चरित्र-चित्रण करते समय लेखक को मनोविज्ञान का अच्छा ज्ञान होना आवश्यक है। जिसके कारण उसका निष्कर्ष, सार-गर्भित बन जाता है।

२) नाटकीय प्रणाली --

नाटकीय या अभिनयात्मक प्रणाली स्वाभाविक होती है और पाठक की कल्पना-शक्ति को क्रियाशील करने में सहायक सिध्द होती है। इस पध्दति में लेखक तटस्थ रहता है और पात्रों को इस बात की स्वतंत्रता देता है कि वे अपने वार्तालाप एवं क्रिया कलापों द्वारा स्वयं को अनावृत करे और उपन्यास के अन्य

पात्रों के विश्लेषण और निर्णय के द्वारा अपनी चारित्रिक विशेषताओं की पुष्टी करें।

इसके अलावा उपन्यासों के चरित्र-चित्रण की गौण प्रणालियां प्रचलित है वर्णनात्मक प्रणाली, आत्मकथात्मक प्रणाली, पत्रात्मक प्रणाली आदि।

"शहर में घूमता आईना" में चरित्र-चित्रण —

उपन्यासकार अश्क जी के उपन्यासों में समाज के प्रत्येक अंग का विस्तृत रूप से चित्रण हुआ हैं। "अश्क" ने उच्च, मध्य एवं निम्न वर्ग के पात्रों की बहुलता से सृष्टि की हैं। उपन्यासकार प्रेमचंद के बाद "अश्क" ने ही इतने पात्रों का सृजन अपने उपन्यासों में किया हैं। "अश्क" ने अपने उपन्यासों में चरित्र-चित्रण यथार्थ की भूमि में नितान्त अस्थिर, दुर्बल, एवं कष्ट साध्य सा दिखाई पड़ता हैं। जिनमें सामाजिक और व्यक्तिगत दुर्बलताएँ भी हैं। यदि वे अपनी कमजोरियों से गिरे तो उन्हे गिरने दी दिया गया, यदि कष्टों एवं इच्छाओं से प्रेरित ही बढ़ना चाहा तो बढ़ने दिया गया। "अश्क" ने उनके चरित्र-विकास में न तो किसी प्रकार की बाधा ही पहुँचाई और न अपनी ओर से ही उन्हें सहारा देने का यत्न किया। पात्र स्वत: ही उन्नति एवं विकास को प्राप्त होते हैं। मानव जिस प्रकार अपनी परिस्थियों के चक्र में खुद-ब-खुद फंस जाता है, वैसे ही अश्क के पात्रों में प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप में यही स्थिति देखने को मिलती हैं।

"शहर में घूमता आईना" के चरित्र — १) चेतन

नायक चेतन का व्यक्तित्व सामाजिक रूढ़ियों, आर्थिक शोषण तथा सेक्स संबंधी कुण्ठाओं से पूर्ण हैं। नायक चेतन में पिता शादीराम के खून की गर्मी हैं मगर माँ के शांत तथा धर्मपरायण, सहनशील आदि अनेक संस्कारों का प्रभाव, उनके व्यक्तित्व में सहज ही दिखायी देता हैं। चेतन रीढ़-रहित, ढुलमुल - यकीन, कमजोर और अत्यन्त साधारण व्यक्ति हैं। चेतन एक नही अनेक समस्यों

से घिरा पडा हैं। उसके सामने निश्चित ऐसा कोई भविष्य नहीं है। पेतन कभी पत्रकार, सम्पादक, महान लेखक, वक्ता, सब-जज, अभिनेता बनने के स्वप्न देखता हैं। उसके विचारों में कोई दृढ़ता दिखायी नहीं देती। उसके व्यक्तित्व में हमेशा ईर्ष्या के भाव उपजते दिखायी देते हैं। अमीचन्द के डिप्टी कलेक्टर बनना, हमीद के रेडियो डायरेक्टर बनना, दीनानाथ का जडिये के बजाय हकिम बनना आदि एक नही अनेकों बार उसके मन में ईर्ष्या के भाव उपजते हैं। पेतन निम्न मध्य वर्ग में जन्मा और अभाव में पला युवक हैं। उसे हर समय अपने विवशता का एहसास होता है। पेतन संघर्षशील युवक है। उसमें संघर्ष करने का अदम्य साहस भी है। वह अपनी विवशता की सिसकियों से समाज की उन गतिविधियों को जो मानव में शोषण की प्रवृत्तियाँ पैदा करती है उसे सदा-सदा के लिए नष्ट करने का प्रण करता है किन्तु परिवारिक संस्कारों में जकडे रहने के कारण उन्हें बदलने में असफल रहता हैं।

पेतन को वासना एवं सेक्स से पीडित बताया गया हैं। साली नीला जब पेतन की बीमारी में उसकी सेवा-सुश्रूषा के बहाने नजदीक आती है तो वह उसे भाव-विवशता में आकर चूम लेता हैं। जिसके कारण उसे पश्चाताप होता है और नीला से माफी भी माँगता हैं। पेतन जिस किसी लडकी या स्त्री के संपर्क में आता है उस पर आशिक होता हैं। कुन्ती पर मरता है, केसर से आँख मिचौली खेलता है तथा मित्र अनंत के व्यंग्य करने पर प्रकाशों को अपने अंक में भर लेता हैं।

पेतन कुन्ती से प्रेम करता है, उससे ब्याह भी करना चाहता है मगर पिता के दबाव में आकर वह चंदा से ब्याह करता है; तो नीला पर मरता हैं। मगर चन्दा का गहरा, निथरा प्यार, अदम्य विश्वास, भोला-भाला पन, शांत स्वभाव चन्द अवगुणों के आलावा पेतन को बांध लेता हैं।

पेतन समाज में अशिक्षा, गरिबी, भूख, फरेबी, आर्थिक विषमता, व्यभिचार, अनाचार, गुण्डा-गर्दी, नीति-अनीति आदि अनेक बातों से विचलीत होता दिखायी देता हैं। लाला बांशीराम, जालंधरीमल "योगी" जैसे ढोंगीओं का पर्दाफाश करता हैं। लाला गोविन्दराम जैसे देश-भक्तों से प्रभावित होता है

मगर ऐन वक्त उनका हक्क छिननेवाले सेठ हरदर्शन के कारण दु:खी हो जाता हैं। पेतन द्वारा समाज का यथार्थ रूप देखने को मिलता हैं।

२) <u>पन्दा</u> —

उपेन्द्रनाथ "अश्क" जी चरित्र-चित्रण की कला में सिध्दहस्त उपन्यासकार हैं। यद्यापि उन्होंने वर्णनात्मक प्रणाली को अपनाया है, फिर भी इस प्रणाली के द्वारा पात्रों के अंतर-बाह्य व्यक्तित्व पर प्रकाश डालने में पुरी सफलता पायी हैं।

पन्दा बचपन से ही आलसी थी। उसे सजना संवरना नहीं आता था। रंग उसका साँवला था और बदन से मोटी - मुट्टली थी। रहन-सहन में सादगी के कारण पन्दा गँवारू दिखायी देती थी। इसी सादगी के कारण पन्दा को पेतन द्वारा हमेशा झीड़की सूननी पडती। या यों कहीए कि पन्दा का यह सादगी भरा रहन-सहन पेतन को हमेशा खलने लगता।

पन्दा का जन्म पाँच लडकों के बाद हो गया था। उसके सभी (पाँचों) भाई जन्मते ही मर गये थे। पन्दा को गूजरी का दुध पीला कर पोसा था। पन्दा बचपन में बड़े लाड़-प्यार में पली थी। उसके पिता का ईट का भट्ठा था जो उसके बचपन में खूब चलता था। पन्दा पाठशाला में जाती थी और उसके पास खूब गहने होते, जितने बड़ी लडकियों के पास भी न होते। पन्दा के छोटे उम्र में ही उसकी माँ दान-दहेज की व्यवस्था करने लगी थी मगर कुछ दिन बाद पिता के कारबार में घाटा हो जाता है और एक-एक गहने चले जाते हैं। उसने पाठशाला जाना बन्द कर दिया। उन्हीं दिनों उसके पिता के पैतृक मकान का हिस्सा बडे भाई के हाथ बेच देना पडा। बाद उसने विवाह के समय अपना ईटों का भट्ठा बेंचकर उसकी शादी में दान-दहेज की कमी नहीं होने दी।

पन्दा का आलसी स्वभाव, रहन-सहन की सादगी और पन्दा को सजना-सँवरना न आने के कारण पेतन हमेशा पन्दा पर बमक जाता। मगर इन बातों के अलावा पन्दा के पास बहुत सारे अच्छे गुण भी थे जो पेतन को बडे से बडे

संकटों में भी धैर्य और सहनशीलता बनाये रखने में सहायक होते। चन्दा में बेपनाह सहनशीलता थी। साक्षात चन्दा सहनशीलता की देवी थी। जब भी चेतन चन्दा पर गुस्से में बरस जाता वह उत्तर में एक शब्द भी न कहती और चुपचाप सुनती जाती।

"चन्दा की वे मूक, ममहित, उदास पनियारी आँखें चेतन के सीने में दूर तक उतर गयी थी और उसका वह इतने दिनों से जमा हुआ और आखिर फट पड़ने वाला दुर्वार क्रोध उन आँखों से निकलकर चुपचाप उसके गालों पर बहती हुई उन दो बूँदों से एकदम पानी-पानी हो गया था। उस क्रोध की जगह आ गयी थी, वही पुरानी करूणा-अपनी और चन्दा दोनों की स्थिति पर ....." । [१]

पर कभी-कभी यही सीधी-सादी, फूहड और गँवार दीखनेवाली चन्दा भी उसकी अपनी ऐसी आदा के कारण चेतन को भा जाती।

" रात बिस्तर पर लेटा तो उसे नींद न आयी थी। वह लगातार चन्दा के बारे में सोचने लगा -- वह उसके बराबर चारपाई पर लेटी हुई उसकी पत्नी, जिसे वह सीधी-सादी, फूहड, और गँवार समझता रहा है अन्दर से कितनी गहरी, सभ्य और सुसंस्कृत हैं। वह प्राय: उसका बाहर का रूप देखता रहा हैं। जब-जब उसके अन्तर की झलक उसे मिली है, वह चकित रह गया हैं। " [२]

" लेकिन आप घबराइए नहीं, उसी सरलता से चन्दा ने कहा, मैं धीरे-धीरे सब सीख जाऊँगी। आप ठीक कहते हैं। कपडे भले ही कम हो पर दूसरे-तीसरे धों कर साफ तो रखे ही जा सकते हैं। उस दिन अचानक चातक जी और उस लडकी के आ जाने से आपकों जरूर कुछ बुरा लगा होगा। " [३]

---

१ "एक नन्हीं किन्दील : "अश्क"" -- पृष्ठ ६९९।
२ " -- वही -- -- पृष्ठ ७११।
३ " -- वही -- -- पृष्ठ ७१३।

इसी समझदारी और सहनशीलता के कारण चन्दा के कुछ दुर्गुण पूरे तरह से फीकें दीखायी देते। और चन्दा की वह मुस्कराहट जो मोतियाँ बिखरे देती। यही अदा चेतन की बहुत आ जाती।

चन्दा में ईर्ष्या का बिलकुल अभावासा दिखायी देता हैं। जबकि उसकी जेठानी चम्पा ईर्ष्या वश जरा-जरा सी बात पर अपने पति पर बमकती है और ईर्ष्या तथा द्वेष हर समय उगलती रहती हैं। यही ईर्ष्या चम्पा को खा जाती हैं। मगर चन्दा चम्पा के साथ बहन सा व्यवहार करती हैं। चम्पा को क्षय होने के बावजूद भी उसकी सेवा-सुश्रूषा करती हैं। चम्पा को साथ लेकर थाली से थाली लगाकर खाना खाती और खिलाती है। मगर यही चम्पा द्वेष भावना के कारण अपना झूठा चूपके से चन्दा के थाली में डालती हैं। (जिसकी परिमति अंत में चन्दा को भी क्षय की बीमारी खा जाती है।) मगर भोली-भाली चन्दा यह सब डाव-पेच नही समझती। वह बिलकुल भोली और निरीह सी दिखायी देती हैं।

> " मैं चन्दा की बात नहीं जानता। वह भोली-भाली, हँसमुख औरत है और किसी के लिए मन में हसद पालना उसके बस में नहीं। " [१]

चन्दा जैसी सहनशीलता की देवी पर भी दुखो का पहाड सा तुट जाता हैं। पिता के दीवालिये होने के कारणं पागल ही जाना और पागलखाने में भरती किया जाता हैं। इधर माँ बेसहारा होकर वह भी लाहौर आ जाती हैं और सेठ के घर खाना-पकाना बनवाकर और बर्तन माँजकर गुजार करती हैं। यह बात अहंकारी पति को खलती है और वह सारा गुस्सा चन्दा पर ही उगलता हैं। चन्दा पर चारों ओर से दु:खों का पहाड ही आ गिरता हैं। मगर चन्दा फिर भी यह सब चुपचाप सहती रहती हैं।

जब चेतन "भूपाल" की नौकरी छोडकर डरते-डरते घर आ जाता है कि अगर चन्दा को नौकरी छुटने का पता चल जायेगा तो वह कितनी नाराज हो

---

१ "एक नन्ही किन्दील : "अश्क"" — पृष्ठ ३८३।

जायगी मगर चन्दा इस पर भी कहती है —

" चन्दा की मुस्कान और फैल गयी, फिर क्या हुआ। जैसे अपनी आँखों और वाणी से ही दुलारती हुई बोली, और दस नौकरीयाँ मिल जायेंगी। " १

चन्दा चेतन को संकट हो या कोई दु:ख उसमें भी बडे धैर्यता से जीने का हौसला दे देती हैं। चन्दा के इसी स्वभाव के कारण चेतन का संकट के समय भी बडे आराम से जीने का मार्ग सुकर हो जाता हैं। सचमुच चन्दा धैर्य और सहनशीलता की देवी हैं। संकट और दु:ख के समय चेतन बहुत घबराता है और वह सोच में पड जाता है कि अब आगे क्या होगा ? मगर चन्दा इस मामूली बात समझती है और फिक्र न करने को कहती हैं। चन्दा चेतन के हर अँधेरे समय में एक टिमटीमाती रोशनी बनकर मार्ग दिखाया हैं। जब भी चन्दा चुप और उदास रहती थी तो चेतन को वह असुन्दर लगती हैं। और जब भी चन्दा मु मुस्कराती तो मोती बिखेर देती।

३) नीला —

उपेन्द्रनाथ "अश्क" जी चरित्र-चित्रण की कला में सिध्दहस्त उपन्यास कार हैं। यद्यपि उन्होंने वर्णनात्मक प्रणाली को अपनाया है, फिर भी इस प्रणाली के द्वारा पात्रों के अंतर-बाह्य व्यक्तित्वपर प्रकाश डालने में पूरी सफलता पायी हैं।

नीला अल्हड और चंचल, सुकुमार बालिका हैं। जिसने अभि-अभि जवानी में कदम रखा है। वह नायक चेतन के सामने तब आती है, जब चेतन बस्ती गजाँ जाता हैं और अपने दोस्त मुल्कराज को लेकर बस्ती के अड्डेपर स्कूल से आती हुई चन्दा को देखने जाता है मगर वहा उसकी प्रथम दृष्टि नीला पर जाती हैं। नीला चेतन के सामने से माप-माप करती हुई उससे आँखें मिलाकर चली जाती हैं।

---

१ "एक नन्ही किन्दील : "अश्क"" — पृष्ठ ३८३।

नीला तो चली जाती है मगर उसकी एक झलक में ही चेतन घायल हो जाता है और नीला की ओर आकर्षित हो जाता हैं। नीला भी प्रथम दृष्टि में ही चेतन पर हावी हो जाती हैं। जब दूसरी बार चेतन चन्दा को देखने उसके घर जाता है तब भी नीला उसके सामने आ जाती हैं।

नीला और चेतन का सामना चन्दा और चेतन के ब्याह के समय होता है, जब अन्य लोगो के साथ नीला भी अपने मद भरे सुरीले गले से गाती है तो चेतन बरबस उधर ही आकर्षित होकर मंत्र-मुग्ध सा सुनता रहता हैं। बाद शादी के नीला चेतन से छंद सुनाने का अनुरोध करती हैं। तब चेतन यह छंद सुनाता है —

> " छन्द परागे आए, जाइए छन्द परागे तीला छन्द गया मैं भुल्ल सभे, जद सामने आयी नीला छंद सुनते ही नीला का मुख कानों तक सुर्ख हो जाता हैं। वह अपने सखियों के साथ ठहाका मार कर हँस देती हैं। " [१]

> " चेतन यों ही आकाश की ओर ताक रहा हैं और नीला उसके पास आ जाती हैं और किसी कहानी के किताब से निकाला हुआ वाक्य दिखाती दिखाती है — "मैं कैसे कहूँ कि मैं तुमसे प्रेम नहीं करती।"" [२]

यहाँ नीला अपना प्रेम चेतन पर प्रकट करती हैं। वह किसी कहानी के वाक्य की ओर इशारा करके अपने असीम प्रेम का सबूत दे देती हैं।

चेतन जब इलावलपुर में कान्ता के ब्याह के समय बीमार पड़ता है तब नीला उसके करीब आ जाती है। नीला चेतन की सेवा-सुश्रूषा करती हैं। प्यार से चेतन का सिर दबाती है, उसके बालों पर हाथ फेरती है, उसके बालों की प्रशंसा करती हैं। अपने बालों के साथ तुलना करती हैं। पपडी जमे हुए होठों पर हाथ फेरती है, उस मक्खन लगाने को कहती हैं। मजाक में हजामत बना दूँ क्या ? कहती हैं। नीला चेतन पर अपना प्रेम अनेक प्रकार से व्यक्त करती हैं। नीला चेतन से कहती है कि मैं ब्याह कभी न करूँगी ! अपनी बहन प्रमिला का उदाहरण

---

१ "गिरती दीवारे : "अश्क"" — पृष्ठ २२२।

२ " — वही — — पृष्ठ २३४।

देती हैं। चेतन को भूख लगती है तो गिलास में गर्म दूध लेकर आती है और चेतन के पास बैठकर उसे दूध पिलाती हैं। जब चेतन भावना विवश होकर नीला को चूम लेता है तो चेतन के बाहों से निकलकर कुछ न कहते हुए नीचे की ओर भाग निकल जाती हैं। फिर चेतन के पास कभी नहीं आती।

मगर नीला का ब्याह रंगून के अधेड विधुर मिलिट्री एकाउँटेंट से हो जाता हैं। जो व प्रौढ है मगर नीला तो केवल चौदह वर्ष की बालिका है। नीला यह चुपचाप सह लेती हैं। अपनी ओर से विरोध नहीं दर्शाती। चुपचाप ब्याह के बंधन में बाँधी जाती हैं। यहाँ नीला के प्रेम का अन्त बडा करुणामय हो जाता हैं। वह दिलपर आघात करता हैं। नीला इतनी दूर चली जाती है कि फिर कभी चेतन के जीवन में शायद लौट कर न आ सके।

४) <u>अमीचन्द</u> --

अमीचन्द यह चेतन का बचपन का साथी था। अमीचन्द बचपन से ही मेधावी था। वह हर साल अव्वल नम्बर से पास होता था। अमीचन्द के पिता लाला मणिराम असिस्टेण्ट पोस्ट मास्तर थे। जो बाद अपनी आधी पेन्शन बेचकर उन्होंने अमीचन्द को लाहौर के गोव्हरमेण्ट कॉलेज में दाखिल करवाया। अमीचन्द डिप्टी-कलक्टर के कम्पीटीशन में पास हो जाता हैं। पूरे मुहल्ले में उसकी चर्चा हो जाती हैं।

अमीचन्द बचपन से ही चेतक का स्पर्धक रहा हैं। और अन्त तक भी चेतन के मन में हमेशा ईर्ष्या के भाव पैदा करता रहा हैं। यहाँ तक की चेतन को कभी-कभी जल-भुनने पर भी मजबुर करता हैं। वैसे अमीचन्द अक्खड़ भी है। एक बार शिमला के स्कैण्डल-प्वाइण्ट पर चेतन और अमीचन्द की मुलाकात होती है, तो चेतन अमीचन्द की ओर खुशी से हाथ बढ़ाता है मगर अमीचन्द की रुखी भंगिमा और स्वर की दूरी से चेतन को परे ही रुकने पर मजबूर करता हैं। यह दृश्य चेतन की बार-बार खलता हैं। चेतन अमीचन्द और उसकी प्रशंसा से बचना चाहता है

मगर वही बार-बार उसके सामने आ जाता हैं। यहां तक की जब चेतन लाहौर चला जाता है, और उसकी सास सेठ के यहां चौका-बर्तन और खाना-पकाना बनाने का काम करती है उसी घर के सेठ की लडकी कृष्णा के साथ अमीचन्द की सगाई होती हैं।

अमीचन्द यह पात्र चेतन को क्रियाशील बनाने पर सहायक होता हैं। अमीचन्द के कारण ही चेतन को अपने अस्तित्व का पता चलता हैं। और हम भी कुछ कम नहीं का भाव चेतन के मन में उत्पन्न करता हैं। अमीचन्द के कारण ही चेतन लॉ कॉलेज में दाखिल होता हैं। और फर्स्ट क्लास में पास भी होता हैं।

५) पण्डित गुरदासराम —

उपेन्द्रनाथ "अश्क" जी चरित्र-चित्रण की कला में सिध्द हस्त उपन्यासकार हैं। यद्यपि उन्होंने वर्णनात्मक प्रणाली को अपनायी हैं। फिर भी इस प्रणाली के द्वारा पात्रों के आंतर-बाह्य व्यक्तित्व पर प्रकाश डालने में पूरी सफलता पायी हैं।

पंडित गुरदासराम का चरित्र अंकन भी वर्णनात्मक ढंग से ही हुआ हैं। लेकिन उनका समस्त व्यक्तित्व गुण-दोष सहित पाठकों के सम्मुख खडा हो जाता हैं। पं॰गुरदासराम मँझोले कद के, निहायत गठे हुए बदन के आदमी थे। गोरा रंग और बडी-बडी मूँछें उनकी खासियत थी। हाथ में हमेशा लाठी थी। लठैत की कला में सिध्दहस्त थे। बडे-बडे डाकुओं को उन्होंने अपने लाठी का कमाल दिखाया था। आज उमर ढल गयी है, बुढापे ने उन्हें ग्रस्त लिया है, फिर भी हाथ की लाठी जैसी की वैसी हैं।

उनका परिवार भरा-पूरा था। उनके चार लड़के थे। बड़ा लड़का जो बिलगा में रहता था, कालवश हो गया था। दूसरा दौलतराम ज्योतिषी थां। तीसरा मैट्रीक करके ऑडिट ऑफीस दिल्ली में नौकर हो गया था। चौथा प्यारे लाल मुहल्ले का ही नहीं, शहर का गुण्डा था। प्यारू गुण्डे के नाम से प्रसिध्द था। पत्नी गुरदासराम के प्रति अपार श्रध्दा रखती थी। उनके साहस की

कहानियाँ बार-बार दुहराती थी। उनकी लटैत-कला पर उसे नाज था। बस पं॰ गुरदासराम के प्रति चेतन को मन में अपार श्रध्दा का भाव होना चाहिए था। लेकिन उनमें कुछ दुर्गुण भी थे। जिन्होंने उनके गुणों पर पाणी फेर दिया।

गुरदासराम को अपना यह साहस और शक्ति का विध्यायक काम में लगाना चाहिए था। परंतु वे तो गरीबों की मदत करने की अपेक्षा उनके काम में रोंडा अटकाता था। रामदित्ते की शादी उनके कारण न हुई। इसी कारण चेतन को उस लटैत बुजुर्ग के प्रति घोर घृणा का भाव अंकुरित हो उठा था। श्रध्दा की जगह घृणा और प्यार की जगह नफरत ने लेली।

६) भागो उर्फ भागवन्ती --

उपेन्द्रनाथ "अश्क" जी वर्णनात्मक कला में सिध्दहस्त अपन्यासकार है। भागो का चित्रणभी उन्होंने वर्णनात्मक ढंग से किया है, जो उस जमाने में किसी लडकी के माता-पिता गुजर जाने के बाद उस लडकी को अपने अश्रय-दाता को किस-किस प्रकार की किमत चुकानी होती इसका उदाहरण भागो हैं।

भागवन्ती का जन्म शिवालक की हरी भरी घाटी में छोटे से गाँव में हुआ था। बचपन ही में उसके माता-पिता परलोक सिधार गये। तभी चाचा के यहाँ कठोर परिश्रम करना पडा। चाचा के ढोर-डंगर चराती, खेत गोडती, रोपती, डंगरो के लिए घास छीलती, समय पडने पर खाना पकाती, बरतन मलती, नदी से पाणी लाती। यह सब करते-करते उसे पता भी नही चला कि वह कब जवान हो गयी। उसके जवानी और श्रम के चर्चे होने लगे। जिसके घर जायगी उसकी किस्मत तर जायगी। उसके लिए इर्द-गिर्द गांवो से संदेसे आने लगे। लेकिन उसके चाचा ऐसी श्रमशील लडकी तैयार करके बिना कुछ पाये सौपने को तैयार न थे। चाचा भागवन्ती के बदले एक हजार रुपये चाहते थे। मगर कोई तैयार न था।

एक दिन भागवन्ती का चाचा उसे लेकर मुकेरियाँ पहुँचा कि उसे किसी जरूरत मन्द के हाथो सौपकर भार हल्का करें। जब यह बात पं॰ शादीराम को

मालूम हुई तब उन्होंने अपने मित्र मुकन्दीलाल के बड़े भाई धर्मचन्द के लिए भागो के बारे में सोचा और पानी वाले से संदेसा भेजकर मुकन्दीलाल को बुलाकर और उसके बाबा को डरा-धमकाकर चार सौ रुपये में भागो लेकर धर्मचन्द से उसका ब्याह करते हैं। कुछ दिन बाद धर्मचन्द की मृत्यु हो जाती हैं। भागो मुकन्दीलाल की हवस की शिकार हो जाती हैं। बाद मंगल से भी उसका संबंध हो जाता हैं। अन्त में एक दिन तेलू के साथ अपने बच्चों समेत भाग जाती हैं। लेकिन अमीरचन्द जैसे धर्मान्ध के हाथों पीट भी जाती हैं। अन्त में पं॰ शादीराम का ही सहारा लेकर तेलू की हो जाती हैं।

७) अनंत —

अपेन्द्रनाथ "अश्क" जी ने अनंत जैसे पात्र चित्रण की वर्णनात्मक ढंग से ही किया हैं। अनंत के विचार पाश्चात्य जीवन-जीने वाले लोगों के विचार हैं। खुली जिन्दगी-जीने के विचार व्यक्त किये गये है जो चेतन के विचारों के बिल्कुल विरुद्ध दिखायी देते हैं।

अनंत चेतन का अभिन्न मित्र है। चेतन जब कोई संकट में होता है या कोई निर्णय लेना होता है तब वह राय लेने के लिए अनंत के पास जाता हैं। अनंत और चेतन में जमीन-आसमान का फर्क दिखायी देता हैं। अनंत मुक्त और खुला जीवन जीना चाहता हैं। जो भी मिले उससे काम लेना अनंत का स्वभाव हैं। औरतों के बारे में उसका विचार था कि उनका एक ही काम है और जो पुरुष उनसे वह काम नहीं लेता वह पुरुष कहलाने के लायक नहीं। प्रेम-प्रेम यह अनंत फालतू और बकवास समझता हैं। जो भी मिले उससे भोग लो। चेतन की सोच की बिल्कुल खिलाफ अनंत के विचार थे। भोग ही जीवन का सर्वोत्तम आनंद है यह अनंत मानता हैं।

उसके जीवन विषयक विचार —

अनंत बेपरवाही से हसा था। "इसके लिए दिल और जिगर की जरूरत है," उसने कहा था,

" तुम जैसे डरपोक के लिए घोंसला बनाना बच्चे पैदा करना और उनके पालने में जीवन बिता देना ही बेहतर हैं। आकाशगामी उकाब की तरह स्वच्छंद विहार करना, घर बनाने का रोग न पालना और अपने शिकार को बरबस झपट लेना क्या हर एक पक्षी के वश की बात हैं ? संसार में कौवे और गिद्ध तो अनेक है, उकाब नहीं। "

"लेकिन सभ्यता . . . . . ? "

"कायरों के दिमाग की उपज हैं। "

"पर शादी . . . . . ? "

"निर्बलों ने अपनी रक्षा के लिए इसका विधान बनाया हैं। "

"किन्तु नारी . . . . . ? "

"वह तो उसी तरह पीडित है, विवाह के बंधन से मुक्त होकर वह कम प्रसन्न न होगी। सभ्यता के विधान ने उसका कम गला नहीं घोटा। " [१]

८) कविराज रामदास —

कविराज रामदास यह पात्र "अश्क" जी के मन-मस्तिष्क पर गहरे रूप से छा गया हैं। छली, कपटी, धोखेबाज, एक नंबर का ठगी, बेइमान जो हर किसी के भी मजबूरी का फायदा उठाता हैं। अपने मीठे भाषण द्वारा सामने वाले व्यक्ति को फँसाता हैं। कविराज रामदास एक प्रकार का शोषक पात्र चित्रित किया गया हैं।

" कविराज जी का यह कायदा था कि वे कटु-से-कटु बात को भी मीठ से-मीठे ढंग से करने का प्रयास करते थे। चेतन को विदा ले जाने से पहले यदि वे उससे कहते, मैं बच्चों के सम्बन्ध में एक पुस्तक, चाहता हैं, तुम उसे मेरे नाम से लिख दो तो चेतन शायद कभी तयार न होता। किन्तु उन्होंने बडे मीठे, प्यारे ढंग से अपना वाँछित काम भी करा लिया और खर्च भी

---

१ "उपेन्द्रनाथ "अश्क"" : गिरती दीवारें — पृष्ठ १६७।

कम से-कम किया था। और वह भी काम करने वाले पर एहसान का बोझ लादते हुए, क्योंकि प्रकट चेतन को उनके विरुद्ध किसी प्रकार की उचित शिकायत न हो सकती थी।" [१]

कविराज एक प्रकार से ठगी वैद्य थे। कविराज ने सेक्स संबंधि चन्द किताबे अपने नाम पर लिखकर प्रसिध्द की भी जो उस किताब को पढता वह अपने-आपको किसी न-किसी संबंधि बिमारी का शिकार समझ कर वैद्य जी के पास आता और उलटे उस्तरे से अपने आप को मुँढ लेता या वैद्य कविराज द्वारा ठगा जाता। कविराज रामदास सेक्स संबंधि विज्ञापन भड़क शब्दों में करते।

चेतन भी एक दिन शारीरिक कमजोरी के कारण कविराज रामदास जी के सम्पर्क में आता है। वैद्य कविराज जी को जब पता चलता है कि नायक चेतन एक अच्छा लेखक है तो वैद्य जी उसे सेहत बनाने के बहाने शिमला ले जाकर चेतन को बच्चों के संबंध में पुस्तक लिखने पर मजबूर करता हैं। एक प्रकार से वैद्य कविराज चेतन के साथ छल-कपट करता हैं। और उसका एक प्रकार से शोषण करता हैं। वैद्य कविराज चेतन के मन-मस्तिष्क पर नासूर बनकर रह जाता है, जो भूलायें भूलता नहीं। यहाँ तक की पाठक के मन में भी वैद्य कविराज के बारे में घृणा के भाव उत्पन्न होते हैं।

९) <u>निहालचन्द उर्फ बद्दा</u> --

"अश्क" जी ने निहालचन्द का वर्णन भी वर्णनात्म प्रणाली से ही किया है। जो बुध्दिमान होते हुए भी झूठी प्रशँसा और माँ तथा माँ के सहेलियों का आनिध्य और उचित मार्गदर्शन न मिलने के कारण निहालचन्द का बद्दा हो गया।

बद्दा अपनी माँ का इकलौता पुत्र हैं। उसके पिता की मृत्यु हो गयी हैं। माँ प्रसन्न कुमारी ने बद्दे को बडे लाड-प्यार से पाला-पोसा हैं। बद्दे को खूब लिखा-पढ़ाकर बड़ा अफसर बना देखना चाहती हैं। मगर बद्दा लगातार आठ

---

१ "गिरती दीवारे : "अश्क"" -- पृष्ठ ४८५/८६।

बरसतक इम्तिहान देकर भी आखिर तक पास नही हो पाता। अन्त में चलाकी करके दूसरों का रोल नम्बर अपना बताकर पास होने का नाटक करता हैं मगर देबू काना उसका यह राज पर्दा-फाश कर देता हैं और बद्दे की असलियत बाहर आ जाती हैं। मगर इधर बद्दे की माँ बद्दा पास हो गया इसलिए सारे के सारे मुहल्ले में लड्डू बाँट देती हैं। बद्दा भी सेकिंड डिवीजन मे पास होने का नाटक करता हैं।

बद्दे में कुछ खुबियाँ भी हैं। वह दिन भर अपनी माँ की सहेलियों में बैठकर मुहल्ले की औरतों के ज्ञान में वृध्दि करने का काम करता था। माँ की सहेलियों को अपनी बुध्दी के चमत्कार से हैरत में डाल दिया करता था। मुहल्ले में किसका जन्म कब हुआ; कौन कब मरा - सब दिन, तारीख, बल्कि हर घटना और दुर्घटना का समय तक उसे याद था। मुहल्ले के लोगों की गति-विधि हर चीज के बारें में उसे पूरा-पूरा ज्ञान था। कई बार जब किसी दिन-त्यौहार का तारीख अथवा मुहल्ले की कोई घटना या दुर्घटना सन्देह अथवा विवाद का विषय बन जाती तो बद्दा सप्रमाण अपनी बात सिध्द कर देता और उसकी माँ की पड़ोसिने उसकी बुध्दि तथा स्मृति की प्रखरता से चकित रह जाती।

बद्दे की इसी आदत के कारण लोगों ने उसे "रन्ना विच्च धन्ना" अर्थात मेहरियों में मेहरा की उपाधि लगा दी थी। बद्दा इसी उपाधि से बिलकुल बेफिक्र बना फिरता था।

१०) <u>रामदित्ता</u> —

"अश्क" जी ने रामदित्ता नामक पात्र का चरित्र अंकन इस प्रकार से किया है कि आदमी की एक गलती, भलमन साहत, कुछ कमजोरियाँ का लोग किस प्रकार से लाभ उठाते हैं। इस भलमनसाहत तथा भोलेपन के कारण रामदित्ता किस प्रकार की किमत चुकाता हैं।

रामदित्ता भोला और गँवार पात्र हैं। उसे सब लोग ठगाते हैं। रामदित्ते के पास झूठे और फरेबी लोगों को पहचान ने की बौध्दिक क्षमता नहीं हैं। रामदित्ते के इसी भोलेपन का लोग फायदा उठाते हैं। उसे उसकी उमर पुछ कर शादी करने की सलाह देते है और लड़की भी खोजने का वादा करके मोफ्त मे लस्सी पीने या पकौडे खा जाते। इसी तरह बार-बार रामदित्ता लपी लोगों से ठगा जाता। इसी कारण उसके सर पर कर्ज का बोझ भी बढ जाता हैं।

रामदित्ते की पत्नी बहुत सुन्दर थी। वह उसे खूब पीटता था। मगर एक दिन रामदित्ते की पत्नी प्रसूति के वेदना में बच्चा मरा हुआ पैदा हो जाने के कारण बाद ज्वर का शिकार होकर चल बसती हैं। रामदित्ता पत्नी की मृत्यु के कारण सर पटक-पटक कर रोता हैं। यहीं से रामदित्ते के करुणामय कहानी की शुरवात हो जाती हैं।

रामदित्ते के घर में कोई बढ़ा-बूढ़ा न होने के कारण दूसरे ब्याह के लिए उसकी ओर से ढंगसे बात-चीत करता। हरलाल पंसारी को रामदित्ते से हमदर्दी थी, पर कोशिशों के बावजूद रामदित्ते का घर बसा न था। एक बार बिलगा से कोई दो पण्डित आये थे। हरलाल पंसारी ने तो रामदित्ते की भलमनसाहत की प्रशंसा की भी और उन्होंने शगुन की दे दिया था, मगर पण्डित गरूदासराम रामदित्ते के बारे में उन दोनों पण्डितों को झूठ बताते है कि रामदित्ते के खून में खराबी हैं। और रामदित्ते की सगाई टूट जाती हैं। तो फिर कभी नहीं हो पाती।

रामदित्ता अन्त में विधवा आश्रम से एक विधवा को ब्याह कर लाता है मगर एक दिन वह भी सब पैसे और गहने लेकर भाग जाती हैं। इसी घटना के कारण रामदित्ता पागल सा बन जाता हैं। गली के छोट-छोटे लड़के भी अब उसका मजाक उड़ाते हैं। रामदित्ता पागलों की तरह उनके पीछे गालियाँ देता हुआ दौडता नजर आता हैं।

११) ज्योतिषी दौलतराम --

ज्योतिषी दौलतराम जुआरी, और शराबी चरित्र का व्यक्ति हैं। एक नम्बर का लबाडी और ढोंगी व्यक्ति हैं। जब भी चेतन के पिता पं॰शादीराम जालंधर आ जाते और उनके शराब की महफिल जम जाती तो ज्योतिषी दौलतराम भी उनके महफिल में आ जाते। जब पीने-पिलाने की बात चलती तो कहते-देखो शादीराम, तुम जबर दस्ती न करों ! मैं हरिद्वार जाकर यह सब छोड आया हूँ। मगर शादीराम अपने मित्रों को दौलतराम को दबोचने को कहते और स्वयं पण्डित जी पेय का गिलास बरबस उनके मुँह लगाते। बाद दौलतराम सभी मित्रों को गालियाँ देते हुए येथेच्छ शराब पीते। दौलतराम के इन्कार में ही इकरार रहता था। उपरी तौर पर वे ना कहते मगर पीने की तृष्णा उनकी आँखों में ललचाती हुई नजर आती। बाद में गालियाँ देने का नाटक करते। और कहते कि मेरा धर्म बिगाड दिया हटो कहते हुए, गिलास को मुँह से लगा लेते।

" यह बात कभी चेतन की समझ में न आती कि यदि ज्योतिषी जी ऐसे ही सात्विक व्यक्ति है तो चेतन के पिता के जालंधर आते ही क्यों उनके घर मँडराने लगते हैं। बाद में उपवास रखने और तप-तप का मोल लेने के बदले पण्डित शादीराम की महफिलों से कन्नी क्यों नहीं काट जाते ?" [१]

१२) देबू --

देबू ज्योतिषी दौलतराम का बेटा और पं॰ गुरदासराम का पोता हैं। देबू एक आँख से ऐंचाताना था। मुहल्ले वाले जब उपेक्षा से उसका नाम लेना होता तो वे उसके नाम के साथ "काना" जोड देते। देबू काने की माँ लड़ाकी स्त्री थी। यहाँ तक कि वह अपने पति दौलतराम को भी पीट देती थी। जो स्त्री अपने पति को पीट देती तभी वह अपने बच्चों से क्या सुलुक करती होगी इसकी कल्पनाही की जा सकती हैं ? देबू की माँ देबू को खूब पीट देती थी। देबू शैशव में ही मुँहपर

---

१ "शहर में घूमता आईना : "अश्क"" -- पृष्ठ १८५।

मुक्के खाने की आदत पड गयी थी। जैसा कहा जाता है कि बच्चों की बचपन में पीट देने से उसकी हड्डी मजबूत हो जाती हैं और रोने से फेफड़ा। इसी प्रकार देबू माँ से पीटकर अपने चाचा प्यारे लाल के पास गया तो उसने देबू की हड्डियों को एकदम इस्पात का बना दिया।

गुण्डा-गर्दी करना, मार-पीट करना, चोरी करना आदि बातों में देबू माहिर हो गया। लडाई-झगडा करते समय - अक्सर - कुअक्सर का विचार लिए बीना या प्रतिद्वन्दी तगडा है आदि बातों का विचार किए बीना ही कूदता और पीट जाता। कभी-कभी इतना पीट जाता कि नीम बेहोशी की हालात में घर लाया जाता। बाद देबू एक-एक को चुन-चून कर इतना पीट देता कि बाद उसे अकेला पाकर भी सामनेवालों की हिम्मत नहीं होती कि देबू को हात लगाये।

देबू को सुधार ने की अपेक्षा के कारण उसकी शादी की जाती हैं। उसको इतनी सुन्दर पत्नी मिल जाती है कि लोग कहते है — देबू ने जरूर पीछले जन्म में मोतियों का दान किया होगा। मगर इतनी सुन्दर पत्नी पाकर भी देबू में कोई फर्क नही आ जाता। सुन्दर पत्नी भी देबू को बाँध सकने में असफल रह गयी। देबू पत्नी सुन्दर हो या असुन्दर उसका एक ही उपयोग देबू के निकट था। वह काम उसने भरपूर उससे ले लिया। पति के अतिरिक्त उसका कुछ दूसरा भी कर्तव्य है इसे वह न मानता था। देबू की बेपरवाही और उसके माँ के अत्याचारों ने दो ही वर्ष में उस भोली-भाली लड़की को यक्ष्मा की गोद में ला डाला।

देबू का एक किस्सा बतला गया है कि चेतन और उसके साथी तथा "हुनर" साहब को साथ लिए खालसा होटल जाते है और वहां देबू और बिल्ला तथा उनके साथी मिल जातु हैं। परिचय के बाद जब खाना खाने के लिए बैठने को जगह न होने के कारण देबू चारपाई पर बैठे युवकों को उठने के लिए कहता है मगर उसमें का एक विरोध करता है तो देबू उसे मार भगाता हैं। एक ही नहीं अनेक करतूत भी दिखाता हैं। राह जाते हुए की पीछे से जागर उसकी टोपी

गिराना और दोस्त समझकर गिराने का बहाना करना। एक नहीं अनेक प्रकार का गुण्डा-गर्दी करना देबू का रोजका काम ही था।

१३) हकीम दीनानाथ —

चेतन जब शमदिल्ले के होटल से निकल कर अनंत के साथ चौरस्ती अटारी पहुँचकर अनंत से बिदा होकर हकीम दीनानाथ की ओर चला जाता है, जो दीनानाथ उनका सहपाठी हैं। दीनानाथ का परिचय कुछ इस प्रकार है —

" हकीम दीनानाथ उनका सहपाठी था। जब वह उनके साथ आठवीं कक्षा में पढ़ता था तो अपने पिता और चाचा की तरह हष्ट-पुष्ट था और उन्हीं की तरह उसके बड़ी-बड़ी मूछें थी। आठवीं ही में उसकी शादी हो गयी थी और मिडिल पास करके वह अपने पिता और चाचा के साथ दुकान पर काम लगा था। साल बाद ही उसके पहला लडका हुआ था। इन आठ वर्षों में उसके पाँच बच्चे हो चुके थे और न केवल उसका पहलवानों का-सा शरीर दुबला गया था, बल्कि उसकी बड़ी-बड़ी मूँछें भी छँटते-छँटते मक्खी-ऐसी रह गयी थी। अनन्त कहा करता था कि उसके घर एक बच्चा और हुआ तो उसकी मूँछे सफाचट हो जायँगी और फिर कटाने के लिए सिर्फ कानही रह जायेंगे। इस साल हकीम दीनानाथ के छठा बच्चा पैदा हुआ था और अनन्त का संकेत इसी ओर था। " [१]

हकीम दीनानाथ चेतन का सहपाठी और एक अच्छा दोस्त हैं। दीनानाथ जाति का सुनार हैं। उसके पिता और चाचा का जडाऊ गहने बनाने का व्यवसाय हैं। दीनानाथ बचपन से ही बड़ा मेधावी हैं। चेतन की दीनानाथ से खूब बनती थी। दीनानाथ हमेशा अपने स्तर से उँचा उठने की प्रबल साध थी। इसी दीनानाथ के संघर्ष ने चेतन को हमेशा प्रेरणा देने का कार्य किया हैं।

---

१ "उपेन्द्रनाथ "अश्क" : शहर में घूमता आईना"पृ - पृष्ठ ५८।
द्वितीय संस्करण, १९७२।

दिनानाथ में पिता और चाचा की तरह ढीले-ढीले-पन का आभास मिलता था। पिता और चाचा की तरह वह भी कसरत करता था मगर बुध्दि उसने पिता और चाचा की अपेक्षा कुशाग्र पायी थी। उसे पढने का बेहद शौक था। "बंगाले का जादू" नामक पुस्तक लाकर और उससे जादू के विभिन्न प्रकार के खेल दिखाकर दीनानाथ चेतन और उसके सभी मित्रों को दंग करता था। यहाँ दीनानाथ अपनी कुशाग्र बुध्दि का परिचय दे देता हैं।

दीनानाथ हकीम बनना भी एक संयोग की ही बात हैं। जब चेतन पर हमजाद की सिध्दी प्राप्त करने का भूत संवार गया और उसका फल चेतन को सिर दर्द के रूप में मिल गया। दवा-दारू करके सब थक गये तो चेतन के दादा ने अपने मित्र से एक किताब "गंजीना-ए-तिब" लाकर उसके नुस्खे अनुसार दवा तयार करके चेतन को दी जाती है और उसका सर दर्द कम हो जाता हैं। तब वह पुस्तक दीनानाथ ले जाकर उस किताब के अनेक नुस्खे पढकर चाचा दालचन्द की सहायता से दवाई बना देता है और एक दिन हकीम बन जाता हैं। अन्त में पत्रव्यवहार द्वारा "हाजिक" की परिक्षा अव्वल नम्बर में पास करता हैं। उसमें सुवर्ण पदक भी प्राप्त करता हैं। बाद हकीमी शुरू कर देता हैं।

मगर ज्यादे दिनतक हकीमी चला नहीं सकता फ्रॉड से पैसा कमाने की सोचता है और अन्त में पकडा जाने के कारण हकीमी से हात धोना पड़ता हैं। साल को एक बच्चा पैदा होने के कारण उसका हाल कुछ पतला हो जाता हैं।

दीनानाथ जैसे मेधावी का यह हाल देखकर चेतन को दु:ख हो जाता हैं। उसकी कम उम्र में शादी होने के कारण भी बच्चे जल्दी-जल्दी हो जाते है और उसकी मेधावी बुध्दि को गंज लगा दिखाई देता हैं। कम उम्र में शादी के दुष्परिणाम की ओर भी ध्यान आकृष्ट हो जाता है।

१४) <u>चूनीलाल</u> —

चूनीलाल चेतन के दादा के छोटे भाई थे। चेतन ने अपने दादा से ही चूनीलाल के पागल होने की बात जान ली थी - एक बार चूनीलाल महाबीर जी

को सिध्द करने के निमित्त मकान के उपर के चौबारे में चालीस दिन तक बंद हो गया था। अन्दर से ही उसने कुण्डी लगाली थी। और परदादी गंगादेई से उसने कहाँ था कि समय पूरा होने तक उसे कोई न बुलाये, नहीं तो उसका तप भंग हो जायगा।

परदादी गंगादेई का चूनीलाल सबसे छोटा लडका था। परदादी गंगादेई प्यार भी सभी बेटों से ज्यादा चूनीलाल से ही करती थी। हट्टा-कट्टा जवान था। चालीस दिन तक भूखा-प्यासा रहने की कल्पना से ही उसके प्राण सूख जाते थे। दिन में कईबार उपर जाकर किवाडों से कान लगाकर मंत्रो-च्चारण सुनती। तीस-बत्तीस दिन तक उसे किवाडों से आवाज सुनायी न देने के कारण शोर करके किवाड तोड डाले।

चूनीलाल का तपोभंग हो गया और महाबीर ने मुँह पर चाटा मारकर शाप दिया कि जा, तुझे इस बेटे का सुख कभी नसीब न होगा। जब भी तू इसके सामने होगी, यह पागल रहेगा।

सचमूच चूनीलाल पागल हो गया और नंग-धडंग निरावरण दांत किटकिटाता भाग निकला। और जब भी परदादी गंगादेई चूनीलाल के सामने आती तो वह ज्यादा ही पागल बन जाता। अंत में परदादी को अपने लाडले को सुखी और स्वस्थ देखने के कारण हमेशा के लिए जालंधर को त्याग देना पडा और अंत भी अपने पोते के साथ किसी दुरस्थ स्टेशन पर हो गया।

चूनीलाल के बारें में कल्लोवानी मुहल्ले को छोडकर सारे शहर में यह अफवाह फैली थी कि चूनीलाल ने हनुमान को सिध्द कर रखा हैं। चूनीलाल जो कहता है वह सच-सच ही होता हैं। इसीलिए दु:ख-दर्द की मारी स्त्रियाँ सट्टे बाज और जुआरी अपना भविष्य जानने के लिए उनके पास आ जाते। जिस चूनीलाल को खुद का भविष्य क्या होगा या खुद का होश नहीं था वह इन लोगों का भविष्य क्या बता सकता हैं ? मगर समाज अंधा होता हैं। अशिक्षा और अंधश्रध्दा ही का यह एक भाग हैं। दु:खी-पीडित और लालची लोग यह नहीं

सोच सकते या यह बात उनकी समझ के बाहर की हैं।

१५) फल्गुराम --

फल्गुराम यह चूनीलाल का पुत्र था। फल्गुराम चार-पाँच जमात पढ़ा था और पोस्ट में डाकिया का काम करता था। फल्गुराम अपने पिता चूनीलाल के तरह ही लंबा-तगडा, हृष्ट-पुष्ट, चौडे-चौडे शरीर, अपनी डाकिया की वर्दी में डाकिया कम और फौजी ज्यादा लगता था। नायक चेतन जब चौथी पाँचवी में पढता था तब फल्गुराम के दर्शन हो गये थे। चेतन फल्गू और राम यह नाम सुनकर कुछ आश्चर्य चकित हो गया था। और चाचा का मजाक भी करना चाहता था और जब नाम पूछा तो फल्गुराम ने अपना नाम कुछ इस प्रकार से चेतन को लिखकर बताया था --

" चिच्चल खाँ, चिच्चलाचल खाँ, जहिज्जतबिज्जत बिजली खाँ, शेरबहादुर अइच्चे खाँ। " [१]

यह नाम सुनने के बाद ही फल्गुराम में भी पागल होने के लक्षण दिखायी दे रहे थे। फल्गुराम पीर-फकीरों के सम्पर्क में आ गये थे। बाद में उनका भी दिमागी संतुलन बिगड गया था। चेतन के छोटे भाई के जन्म के खुशी का कार्ड फल्गुराम को भेजा तो उत्तर में फल्गुराम ने कुछ इस प्रकार मिसरा लिखा था --

" जहाँ बजते हैं नक्कारे, वहाँ मातम भी होते हैं। " [२]

उसी खत में बार-बार"या रब - या रब" दोनों ओर लिखा था। अपने पागल होने का सबूत दे दिया था। चेतन की माँ ने भी चिंता प्रकट की थी। इन्हीं पागलों के कारण ही उनका कुनबा "पागलों का कुनबा" कहलाता था। जो पीडी-दर पीडी एक ना एक पागल पैदा होता था। और एक दिन माँ की मृत्यु के बाद सचमुच फल्गुराम नौकरी का इस्तीफा देकर और कपडे फाडकर पागल हो गया।

---

१ "उपेन्द्रनाथ अश्क : शहर में घूमता आईना" -- पृष्ठ ६३।
२ -- वही -- -- पृष्ठ ६४।

१६) निश्तर —

निश्तर का नाम नन्दलाल हैं। निश्तर बचपन से ही मेधावी था। और वह अपने बचपन में ही स्वदेशी आंदोलन में कुद पडा था। उस समय महात्मा गांधी ने "असहयोग" का नारा दिया था और पूरा का पूरा देश इसी आंदोलन में कूद पडा था। उस समय आंदोलन अपने पूरे विकसित रूप में फैल रहा था। देश प्रेम की एक बाड सी आ गयी। अंग्रेजों के खिलाफ प्रचार जोरों-शोरों से चल रहा था। लोगों ने विदेशी कपडों का बायकाट किया था। यहां तक की शराब भी पीना लग-भग छोड दिया था। उस समय स्कूल और कॉलेज भी बंद हो गये थे। स्कूल और कॉलेज के लडके भी स्कूल और कालेज छोडकर देशी आन्दोलन में शामिल हो गये थे।

इसी समय बालक नन्दलाल उर्फ आझाद उर्फ निश्तर की उमर सिर्फ बारह वर्ष की थी। इसी कोमल उम्र में निश्तर ने अपने को स्वदेशी आंदोलन में झोंक दिया था। निश्तर बडे-बडे नेताओं के साथ हजारों की भीड में एक मंजे-हुए वक्ताओं की तरह भाषण देता था। और लोगों को अचरज में डाल देता था कि एक बालक भी बडे-बडे नेताओं से कम नहीं हैं। जब निश्तर स्टेजपर आकर भाषण देता या काव्य वाचन करता तो करतल-ध्वनियों से पूरा-आसमान गुंज उठता। एक बार सभा पर पुलिस ने धावा बोल दिया कई लोग घायल हुए और कुछ गिरफ्तार जिसमें बालक नन्दलाल उर्फ "आझाद" भी था। और उसे तीन महिने के कठिन कारावास का दण्ड मिला था। जिस देश में ऐसे बालक जन्में है उस देश पर किसे नाज़ न होगा !

१७) हमीद —

हमीद खैरपुर के दीवान का लडका था। हमीद की माँ जालंधर की एक प्रसिध्द वेश्या थी जो नवाब ने अपने घर रखा था। बाद हमीद के पिता ने और तीन या चार शादियाँ की थी। हमीद और उसके माँ को जालंधर के इस

घर में बंद होना पडा था। हमीद और उसके माँ के लिए महिनो को एक निश्चित रक्कम आती थी और हमीद और उसकी माँ उसी में अपना गुजार करते थे।

हमीद सुन्दर लडका था जो साधे कपडों में भी अपनी सुन्दरता के कारण जँच जाता था। पतला-छरहरा, नर्म-नाजुक, गोरा-चिट्टा, हँसमुख और बेपरवाह! हमीद में अगर कोई दोष था तो वह उपरी दंत-पंक्ति किंचित अंदर को मुडी थी। हमीद बडा ही मेधावी, बेबाक और बेपरवाह छात्र था। हमीद हाजिर जवाबी और अच्छा अभिनेता भी था। हमीद की कुछ इन्हीं आदाओं के कारण कालेज में उसका अपना कुछ खास ऐसा प्रभाव दिखायी देता था। उसका अध्ययन भी काफी विशाल था। उर्दू कविता हो या अंग्रेजी सभी का हमीद ने गहरा अध्ययन कर लिया था। उसकी अपने घर में पुस्तके और पत्र-पत्रिकाओं से अलमारियाँ भर पडी थी। और इन्हीं सब बातों ने चेतन को हमीद की ओर आकर्षित कर लिया था। इनमें और एक खास बात मिनाक्षी का आकर्षण था।

कालेज के बाद हमीद लखनऊ चला गया और वहाँ जाकर रेडियों स्टेशन में प्रोग्राम एसिस्टेण्ट बन जाता हैं। जब चेतन और हमीद की मुलाकात होती है तो हमीद में अब गरूर दिखायी देता हैं। चेतन जानता है कि अब यह पहला वाला हमीद नहीं रेडिओं प्रोग्राम एसिस्टेण्ट हमीद हैं, तो दोनों मित्रों में दरारे पड जाती हैं।

१८) <u>कुन्ती</u> :-

कुन्ती चेतन का पहला-पहला प्यार हैं। यह प्यार सिर्फ देखा-देखी के आगे नहीं बढ सका। कुन्ती और चेतन की आँखे मेले में चार होती हैं। वहीं से उनकी प्रेम-कहानी शुरू हो जाती हैं। चेतन हर-रोज कुन्ती के घर के पास से गुजरता हैं तो कुन्ती भी रोज चेतन को घर के खिडकी से दर्शन दिया करती हैं। कुन्ती भी चेतन की ओर आकर्षित होती है। शायद चेतन भी कुन्ती का पहला-पहला प्रेमी ही है। जो वह चेतन को अपना दिल दे बैठती हैं। चेतन को अपनी

सहेली के बहाने बात तक करने का प्रयास करती है मगर चेतन घबरा जाता है और बात करने में असफल हो जाता हैं। घबराकर चला जाता है। चेतन एक बार जब बीमार होता है और छोटे बच्चे से उसीकी-सी भाषा में जो इशारा चेतन की ओर था कहती है -- कि आप आते नहीं, हम प्रतिक्षा कर के थक जाते हैं। मगर कुन्ती का यह चेतनवाला प्रेम असफल हो जाता हैं।

कुन्ती का विवाह "भोगपुर सरिवाल" के एक मोटे पण्डित से हो जाता हैं। जिसने वहीं पुरियाँ मुहल्ले के पास ही होशयारपुर के अड्डे पर एक प्रेस खोल लिया है। और इसी बीच कुन्ती को एक लडका भी हो जाता है। वैसे वह अब अपने संसार में लग जाती हैं। मगर एक दिन कुन्ती का पति उसे छोडकर चला जाता हैं। आठ दिन तक टाइफाइड में बीमार गिरता है और मर जाता हैं। भरे जवानी में कुन्ती पर आसमान गिर जाता हैं। वह विधवा हो जाती हैं। कुन्ती ने अभी देखा ही क्या था जो भरी जवानी में विधवा हो जाती हैं। जो कुन्ती के हँसते-खेलते जीवन को ग्रहण लग जाता हैं।

१९) कवि "हुनर" --

कवि "हुनर" का पूरा नाम राम प्रकाश हुनर हैं। दूसरों के काव्य पर डाका डालना तथा उसे तोड-मरोड कर अपनी प्रतिभा की उपज बता कर लोगों को उल्लू बनाना अपना नित्य क्रम समझता हैं। किसी भी लडके से परिचय होने पर उसे अपना शागीर्द बनाना और अपना उल्लू सीधा करना चाहता हैं।

भाई गोपालदास के शादी में दुल्हन के गहनों के अलावा अपनी पत्नी तथा दूसरी भावज के भी गहने चढावे में बडपन (बदपपन) दिखाने के लिए रखता हैं। दुल्हन एक रात रहकर मायके चली जाती है और यह घोषणा करती है कि भाई गोपालदास नपुंसक हैं। पूरे के पूरे गहने हडप जाती हैं। जिसके कारण "हुनर" फँस जाता हैं। कोर्ट-कचहरी के चक्कर काटते रहाता हैं। आधे दिन किसी न किसी को फाँस लेता हैं। अब कवि "हुनर" का सूट-बूट चला जाता हैं।

और उसके जगह खादी ले लेती हैं। नास्तीक कवि "हुनर" अब देवी-देवता और पीर-फकीरों पर तथा साधुओं पर आस्था करने लगता हैं। साई बाबा के सम्पर्क में आकर तथा उनका उपदेश मानकर कोर्ट-कचहरी के चक्कर से अपने आप को मुक्त करता हैं।

अंत में सब छोड कर लाहौर चला आता है जहाँ फिर से वहीं पुरानी जिन्दगी शुरू करता हैं। लेखक कहता है कि अगर यह कवि लोगों के काव्य पर डाका डालने के बजाय अपनी प्रतिभा से यदि कुछ लिखता तो अवश्य सफल बन जाता मगर एक बार चोरी की आदत पड गयी तो छुटती नहीं। इसी कारण कवि "हुनर" अपनी तेज-तर्रार प्रतिभा का -हास करता दिखाई देता हैं।

२०) लाला बांशीराम —

उपेन्द्रनाथ अश्क जी ने लाला बांशीराम का परित्र-चित्रण वर्णनात्मक ढंग से किया हैं। अश्क जी ने लाला बांशीराम पर महात्मा गांधी की सीधी-सीधी नकल करने के कारण तीखा व्यंग्य भी उनपर कसा हैं। इसी कारण लाला बांशीराम का ढोंग शीशे की तरह स्पष्ट हो गया हैं।

लाला बांशीराम कद से ऊँचे और शरीर से पतले-दुबले थे। उनके अगले दो दाँत टुटे हुए थे। घुटनों से ऊँची धोती बाँधते थे। बहुत धीरे बोलते थे। बोलते समय "मैं" का उच्चारण "में" करते थे और बात करते-करते कभी-कभी सोचते तो होटो पर उँगली रख लेते। लाला बांशीराम का यह अनुकरण महात्मा गांधी के अनुकरण की नकल थी। लाला बांशीराम अपने आप को महात्मा गांधी से कम न समझते थे। इसलिए उनके किसी भक्त ने लाहौर के एक गुमनाम पत्रिका में "दोआबा" के महात्मा गांधी और उनका कार्यक्षेत्र" नाम का लेख भी लिखा था।

लाला बांशीराम दोआबा विधवा सहायक सभा" के मंत्री और संस्था के मुखपत्र "विधवा-सहायक" के सम्पादक थे। उनके विधवा आश्रम में उनकी सेक्रेटरी बहन सरस्वती देवी के अतिरिक्त और दो विधवा महिलाएँ थी। उनका अधिकांश

काम पचारात्मक था। इसी काम के लिए उन्होंने साप्ताहिक निकाला था। साप्ताहिक वे ऐसा चलाते थे कि सरकार उसे बंद भी न कर सके और कॉंग्रेस के प्रचारात्मक उद्देश्यों का प्रचार भी होता रहें।

एक प्रकार से अश्क जी ने उस समय के महात्मा गांधी की भद्दी नकल करनेवालों पर चांटे कसे हैं। उसी में ही लाला बांशीराम आते है, जो महात्मा गांधी की भद्दी नकल करके अपने आप को महात्मा कहते हैं। उस समय हर प्रांत में महात्मा गांधी की नकल करने वालें ऐसे महात्माओं की कमी न थी। ये लोग महात्मा गांधी का दिमाग कहाँ से लाते, इन लोगों के पास महात्मा गांधी का एक भी गुण नहीं था। मगर सिर मुँडाने, अध नंगे रहने, मौन व्रत रखने, प्राकृतिक चिकित्स करने, उबले सिंघाडे, आलू या दही खाने, तकली चलाने आदि अनुकरण करने में ही अपने आप को महात्मा गांधी समझते थे।

२१) लाला जालंधरी मल "योगी" --

"अश्क" जी ने "योगी" जी के ढोंगो का पर्दाफाश किया हैं। जो "योगी" जी योग साधना और चिंतन-मनन के नाम पर एक प्रकार का ढोंग ही करते दिखायी देते हैं।

लाला जालंधरी मल जी "योगी" का मँझला कद मोटा थुल-थुल शरीर, छोटी खूब मोटी गर्दन, दाये गाल पर नाक के निकट एक बडा-सा मुहासा, काला सियाह रंग - फोटे में वे किसी कवि की जगह गांधी टोपी पहने "कलुए-पहलवान" ऐसे दिखायी देते थे। बांद उन्होंने गांधी टोपी पहननी छोड दी थी। कुर्ता-धोती पहनते। उन्हें गेरुआ रँगा लेते। जल्दी मैला भी न होता और उनके उपनाम के साथ मेल भी खाता।

जालंधरी मल पहले कवि थे और देश प्रेम पर कविताएँ भी लिखते थे। उनके कविताओं का संग्रह भी छपा था। उनकी कविताएँ देश प्रेम से ओत-प्रोत थी। कॉंग्रेस के आंदोलन में भाग लेने के कारण उनको दो वर्ष का कठिन कारावास का दण्ड मिला था।

का दण्ड मिला था। जेल में उन्होंने वेदान्त ही का अध्ययन न किया था बल्कि अपना उपनाम भी "योगी" रख लिया था। उनके जेल चले जाने के बाद उनके पिता बीमार रहने लगे। उनके जेल से छुटते ही पिता का स्वर्गवास हो गया। "योगी" अपने पिता की गद्दी सँभाली। उनकी आढ़ती की दुकान थी। निष्काम भाव से दुकान का काम देखते थे। ऐसा उनका कहना था। और शादी करके पाँच वर्ष में पाँच बच्चे भी पैदा किये। ऊपर चौबारें में चले जाते थे, जिसके बाहर खासी खुली जगह थी। वहीं उनके मित्र आ जाते और लाला जी बडे प्रेम तथा भक्ति-भाव से श्रोताओं को वेदान्त के रहस्य समझाते।

अश्क जी ने उनके अध्यात्मवाद पर बहुत बडा व्यंग्य कसा हैं। अश्क जी ने योग साधना, कर्म फल, चिंतन-मनन, अवागमन, आत्मा-परमात्मा, पुनरजन्म आदि पर व्यंग्य कसा हैं। उन्होंने कहाँ है कि इसी जन्म को सफल बनाना चाहिए न कि पूर्व जन्म का कर्म फल समझ कर अत्याचार सहना यह मूर्खता के ही लक्षण बताया हैं।

अश्क जी का कहना है कि योगाभ्यासी ऋषी जीवन का आनंद और उपभोग लेने के बदले अपने जीवन का किमती या अनमोल समय योग साधना में लगाकर खोते हैं। एक प्रकार से इन्द्रियों पर अधिकार पाकर उन पर अत्याचार करने के ही बराबर हैं। अश्क जी का यह कहना है कि जब ऋषी-मुनि आत्मा को परमात्मा में मिला देते थे, भूत-भविष्यत का राईरत्ती हाला जान लेते थे तो वे भगवान की तरह अमर क्यों नही हो जाते थे, मृत्यु को वे क्यों नही जीत पाते थे? यहाँ तक शंका उपस्थित करते है कि जब भस्मासुर की कथा सुनकर कहते है कि जब शिव ने ही वर भस्मासुर को दे दिया था। जब भस्मासुर शिव को ही भस्म करने गया तो शिव ने स्वत: भस्मासुर को भस्म करने के बजाय भगवान विष्णु के शरण में जाने की क्या जरूरत थी? भगवान विष्णु ने मोहिनी रूप धारण करके छल से भस्मासुर को भस्म किया तो वह कैसा सर्व शक्तिमान हो सकता हैं? वह तो धूर्त और कायर हो गया। यहाँ भगवान को न न्यायशील, सर्व शक्तिमान और सृष्टी का सृष्टा मनाने से इन्कार कर दिया हैं।

अश्क कहते है कि हम जीवन को माया और सपना तथा मिथ्या समझकर भगवान के भरोसे छोडते हैं। हम सदियों से गुलाम रहे हैं। हमारे यहाँ अकाल-मृत्यु संसार के सब देशों से ज्यादा हैं। अशिक्षा, गरीबी, भूखमरी का दौरा-दौर है और लोग परमार्थ की चिंता में लीन है - परलोक बनाने की फिक्र में इहलोक को भूल बैठे हैं। परलोक में उन्हें न जाने सुख मिलता हैं कि नहीं पर इहलोक में दु:ख जरूर मिलेगा। और हमारे ज्ञानी इधर ध्यान देने के बदले ब्रह्म की चिन्ता में निमग्न हैं।

२२) हरसरन —

"अश्क" जी ने हरसरन जैसे तेज और क्लास में पहले आनेवाले लडके को जो एम.ए. तक पढ़ने की इच्छा होते हुए भी पिता के आदेश के कारण पढ़ाई छोड़ देने का दुख व्यक्त किया हैं।

हरसरन शरीर से डील-डौल और गठा हुआ, किंचित खुरदरा और अनगढ़ था। हरसरन के चेहरे पर चिचला के दाग थे और अपने भाई तथा पिता की तरह मोटे शीशों वाली ऐनक थी। चेहरे की बनावट में सदा कुछ ऐसी चीज लगी थी, जो फूहड और खुरदरी थी, नाजुक और मुलायमता नाम को नहीं थी। मगर इसके बावजूद हरसरन पढ़ने में तेज और क्लास में हमेशा फर्स्ट आता था। उसकी खूब पढ़ने की इच्छा थी।

हरसरन के पिता ने रिटायर होकर उन्होंने साइकिलों की दुकान कर ली। धीरे-धीरे दुकान प्रगति कर ली और काम भी बढ़ गया तो पिता ने हरसरन को आदेश दिया कि पढ़ाई छोड़कर अब वह भी काम में हात बटाये और हरसरन को पढ़ाई छोड़ देनी पढ़ी। हरसरन की खूब पढ़ने की इच्छा को तिलांजलि मिली। मगर हरसरन ने पिता और भाई की मददतसे खूब परिश्रम करके "होशियारपुर साईकिल हाऊस" का नाम रोशन कर दिया। छोटी-मोटी मरम्मत के लिए छोकरे भी रख दिये।

मगर अरक जी को इस बात का खेद होता है कि हरसरन जैसे होशियार लड़के को पढ़ने की इच्छा होते हुए भी नहीं पढ़े पाते। मगर दूसरी ओर यह भी नाज़ है कि बी॰ए॰ या एम॰ए॰ करके छोटी-मोटी नौकरी करके पालिस-पचास कमाकर दूसरों की गुलामी करने से तो बेहतर है कि खुद का ही छोटा-मोटा व्यापार-उद्योग कर के सुख-शांति और आज़ादी से रहें।

२३) राजा खैरायती राम --

राजा खैरायती राम ने चातुरवर्णी व्यवस्था के विरुद्ध उठायी गयी आवाज का जिक्र अरक जी ने किया हैं। राजा खैरायती राम जो जाति से नाई होते हुए भी उसी जमाने में भी खत्री और ब्राह्मणों के विरुद्ध आवाज उठाकर चातुर वर्ण व्यवस्था पर व्यंग्य कसा हैं।

खैरायती राम एकदम ठस दिखायी देते। मँझला कद, मोटापे की ओर को आयल दोहरा बदन, उटंग पयजामा, कमीज, उस पर मोटी गबरून का कोट सिर पर बैठी-बैठी सी पगड़ी, खिचड़ी मूँछ और दबी हुई बायीं आँख।

राजा खैरायती राम ने एक स्कूल खोल रखा था। उनके स्कूल में शहर के बड़े-बड़े साहुकारें के लड़के पढ़ने के लिए आते। उनका स्कूल सिर्फ चार जमात तक ही था। और उसमें इतिहास, भूगोल, उर्दू-अंगेजी बगैराह कुछ भी पढ़ाया नहीं जाता था। उनके स्कूल में केवल लण्डे यानी महाजनी पढ़ाई जाती थी। लण्डे बही-खाते की भाषा थी। खैरायती राम चार-पाँच साल के ही अन्दर छात्रों को बणिज लेकर बैठने वाला युवक भी उनके स्कूल से चार-पाँच जमात पास लड़के का मुकाबिला नही कर सकता था। साधारण स्कूल में पढ़े लड़के और खरायती राम के स्कूल में पढ़े लड़को में बहुत अन्तर था। उनके स्कूल के चौथी पास लड़के १०० गुणा १०० तक पहाड़ा कण्ठस्थ कर लेते थे और बड़ी-से-बड़ी रकम का जोड़ घटाना, गुणा या भाग कर सकते थे। इसलिए उनके स्कूल से पास लड़का दुकान पर बैठता उसे बही खाते में किसी तरह की कठिनाई न होती। जिन दुकानदारों अपने लड़को को

अपने साथ दुकानों पर बैठाना होता, उन्हें खैरायती राम के स्कूल में भेज देते।

बाद खैरायती राम वर्ण-व्यवस्था के विरुद्ध आवाज उठाते हैं। और कहते है कि आर्य-समाज के सिध्दांतो के अनुसार ब्राह्मण-क्षत्री जन्म से नहीं कर्म से होते है तो खैरायती राम भी पठन-पाठन का काम करते है, इसलिए उनको पण्डित कहा जाय। और जो व्यापार करते है उन्हें लाला कहां जाय। उनके सभापतित्व में शहर भर के नाइयों की सभा होती है और उसमें यह प्रस्ताव पास किया जाता है कि जो बाल बनाने का काम करते है, वे ही नाई कहला ने के अधिकारी हैं। यदि व्यापारी हो तो लाला कहलाता है और पठन-पाठन का काम करता है तो पण्डित कहलाता हैं।

सनातन धर्मी खैरायती राम के इस प्रस्ताव पर रोष प्रकट करते है और धमकियाँ देते है कि उनका मुकाबिला करेंगे तो यजमानी से हात धोना पडेगा। गरीब नाई डर जाते है मगर खैरायती राम अपने प्रस्ताव से पिछे नहीं हटते वर्ग-संघर्ष के विरुद्ध आन्दोलन आरंभ करते हैं।

२४) <u>बिल्ला</u> —

अशक जी ने शहर के गुण्डा-गर्दी करने वाले लड़कों का चरित्र-चित्रण किया है, सो बड़ा सूक्ष्म और सफल बना हैं।

बिल्ला जिसका नाम हरिकुमार था और उसे लोग "हरिया" कहकर पुकारते। आँखे बिल्ली की आँखोसी नीली-भूरी थी इसलिए उसे बिल्ला कहकर पुकारते। बिल्ला बचपन में पतला-दुबला, गोरा-चिट्टा, सुकुमार सुन्दर दिखायी देता। मगर बाद में स्कूल के पहलवान लड़को की संगति में आखाडे जाकर दो-चार बरस में ही ऐसा सुगठित, हष्ट-पुष्ठ शरीर कमाया। जिसके आगे-पिछे लड़को घूमते लगे।

बिल्ला पढ़ाई में मन्द ही था। आठवी कक्षा से दसवीं तक आते-आते वह दो-दो बार फेल होते गया। जब दो बार फेल होकर भी दसवीं न निकली

तो स्कूल छोड़कर गुण्डा-गर्दी करने लगा। खिंगरा दरवाजे का नाम आते ही राजा बेरायती राम और उनके स्कूल का नाम आता था वहाँ अब खिंगरा दरवाजा के साथ अब बिल्ले का नाम जुड गया। बिल्ला देखते-देखते शहर का नामी गुण्डा बन गया। और हमेशा उसे कोई न कोई गुण्डे लड़के घेरे रहते। उसके निकट जाना सिर-मुँह तुडाने के बराबर था। एक बार बिल्ले को लेकर खिंगरा दरवाजा के सामने अड्डा होशियारपुर को जानेवाली सड़क पर गुण्डो की दो पार्टियों में डटकर मुकाबिला हुआ कि दो के चाकू लगे और दो के सिर फटे। पुलिस का मामला और महिनों मुकदमा चला। बिल्ला सट्टा खेलता, पुलिस को खूब रिश्वत देता, पकड़ा जाता लेकिन रिश्वत देकर हर बार छूट जाता। देखते-देखते दुबला-पतला, गोरा-चिट्टा शरीर वाला हृष्ट-पुष्ठ बनकर शहर का नामी गुण्डा बिल्ले के रूप में जन्म ले लिया। आम आदमी के लिए मुशीबत बना।

२५) जगना —

उपेन्द्रनाथ "अश्क" जी जगना का चरित्र-चित्रण करते समय समाज का बिगड़ा हुआ रूप भी चित्रित करने में पूर्ण सफल हो गये हैं। जो शिव का मन्दिर और धर्म शाला जैसे जगह भी ताश, चौपड, जुआ आदि खेला जाना यहाँ तक कि रास लीला करवाया करते।

जगना मन्दिर के पुजारी का बेटा था। पुजारी के पत्नि और दो लड़कियाँ तथा इकलौता पुत्र जगना था। पुजारी मन्दिर के पास ही के दो मंजिला पुराने मकान के उपरी हिस्से में रहते थे। निचली मंजिल में चार कमरे थे, जिसमें बारातें ठहरती थी। शिवरात्रि में वहाँ खूब चढ़ावा चढ़ता था। बाजार के हर दुकान यहाँ धर्मशाला के लिए चन्दा बँधा हुआ था। मन्दिर की आय खूब थी। पुजारी स्वयं बहुत पढे न थे। इसलिए धर्म शाला का वातावरण पढ़ाई के उपयुक्त न था। लम्बे-चौडे चबूतरे पर मुहल्ले के बेफिक्रे दिन भर ताश, शतरंज और चौपड़ खेलते थे। एक मण्डली जाती तो दूसरी आती और सुबह से शाम तक यहीं क्रम जारी था। यहाँ का वातावरण पूर्ण रूप से बिगड़ा हुआ ही था।

पुजारी कम पढ़े होने के कारण उनकी यही इच्छा थी कि उनकी इकलौती संतान जगना शास्त्र पढ़कर उनकी जगह ले ले। मगर पुजारी के ही सरपरस्ती में वहाँ रात-रात दीवाली के दिनों में जुआ खेला जाता और जब पुजारी को गाँजे का दम लग जाता तो जगना रात-रात भर जगकर नाल निकालता और सुबह आधा पैसा पिता को देता और आधे पैसे में मौज उड़ाता। होटलो में जाना रोगन जोश या शाही कोर्मे के मजे उड़ाना। इन्हीं होटलों मे तस्गाई में उसे तमाश बीनी की भी लत पड़ गयी थी।

पुजारी की मृत्यु के बाद तो धर्मशाला का वातावरण एकदम बिगड गया। बड़ी लड़की का ब्याह पुजारी के मृत्यु से पहले हो गया था। अब जगना अपनी माँ और बहन के साथ रहने लगा। मन्दिर की स्वच्छता का काम माँ और बहन के जिम्मे था। चढावे का आधा रुपया माँ को देता और आधे में मौज उड़ाता। जगने के राज में हर रोज ताशजुऐ के महफिले होने लगी और शहर भर के गुण्डे वहाँ जमकर आती-जाती औरतों की छेड़-छाड़ करने लगे इस कारण लोगों ने मन्दिर और धर्मशाला पर बहिष्कार डाला। चन्दा देना भी बन्द कर दिया। यहाँ तक हुआ कि मुकदमा भी दायर किया।

जगना प्यारु, देबू और बिल्ले के संगती में आकर गुण्डाई के गुरु सीख गया। अब रास्ते से आते-हाते लोगों को तक परेशान करता। पीछे से जाकर जोर से किसी के सर पर तो किसी के पीठ पर जोर के धौल जमाता, कभी गाली तो कभी नमस्कार करता और फिर अपरिचित के सामने ऐसा नाटक करता कि सचमुच उससे गलती हो गयी वह उसे अपना मित्र सोहनलाल या बहरा चाचा बिहारीलाल समझा और गिड़गिडाकर माफी भी माँगता। अपने-आप को इस कला में माहिर समझता। कोई पेशाब के लिए बैठा तो उसे पुछता बादशाहो क्या ढूँढ रहे हो ? उसकी पीठ थपथपाकर कहता कि मूत्र रहे हो ? मूत्रो-मूत्रो ! इस प्रकारे का हर किसी का मजाक भी करता।

दूषित वातावरण में पले जगना से अच्छी अपेक्षा कैसी की जा सकती है ? मनुष्य के बनने और बिगड ने में उसके चारों ओर के वातावरण का भी असर होते

हैं। जगना का तो वातावरण पूर्ण रूप से दूषित ही था। फिर कैसे पुजारी के अपेक्षा सार्थक होती कि जगना शास्त्र पढ़कर उनकी गद्दी सँभाले ?

२६) प्यारेलाल —

उपेन्द्रनाथ अश्क जी प्यारेलाल अर्फ प्यारू का चरित्र-चित्रण करने में पूर्ण रूप से सफल हुए हैं। उन्होंने प्यारेलाल का चरित्र-चित्रण बखूबी चित्रित किया हैं। जो बुराईयों के बावजुद थोड़ा आश्चर्य कारक और मनोरंजक भी लगता हैं।

प्यारेलाल अर्फ प्यारू का जन्म ब्राह्मण परिवार में हो गया था। पिता पण्डित गुरदासराम में चन्द दुर्गूणों के अलावा अनका चरित्र अच्छा था। मगर उनके घर में प्यारेलाल ने एक गुण्डे के रूप में जन्म लिया था। प्यारेलाल को माँ के पेट से ही गुण्डा पैदा होने की उपाधि मिल गयी हैं। प्यारेलाल बचपन से ही गुण्डा-गर्दी की कला में माहिर हैं। प्यारेलाल अपने भतीजे देबू के अलावा और भी कुछ लड़कों को अपने गुण्डा-गर्दी के गुट में शामिल किया हैं। अगर कोई उसका साथ देने से इन्कार करता है तो प्यारेलाल उसे बूरी तरह से पीट देता था। और हर साथी को अपनी फन में ताक कर देता था।

प्यारेलाल के कुछ किस्से बताये गये हैं - जो एक बार कैरियाँ खरीदने जाते है और दुकानदार का ध्यान दूसरी तरफ देखकर एक-एक कैरियाँ चुराकर अपने साथियों को देता है और बाद में दो कैरियाँ दुकानदार को दिखाकर उसे एक पैसा दे देता हैं। दूसरी बार खरबूजे खिलाने के लिए अपने सभी दोस्तों को बाजार ले जाता है और खरबूजे वाले का ध्यान दूसरी ओर देखकर एक-एक करके खरबूजे आपने पैरों के बीच से ठेल कर दोस्तों को दे देता हैं। और सभी को खिलाता हैं। तीसरा दुकानदार को पैसे दिखाकर जेब में वापिस रखना और मिठाई लेकर पैसे देने का भाव लाना अगर पकड़ा गया और दुकानदार ने गाली दी तो उसकी पीटाई तक कर देता। या चलते-चलते अनार, सेब या केले उडाना तो प्यारू का बायें

हाथ का खेल था। चोरी करने जाते समय वह अपनी पूरी टोली को भी साथ लेकर जाता था।

चोरी के अलावा प्यारू में और भी कई प्रकार के अवगुण थे। सिगरेट-बीड़ी पीना, गन्दे-अश्लील टप्पे गाना लड़को से गन्दे-अश्लील मजाक ही न करता बल्कि गन्दी गालियाँ देता तथा उन्हें हर तरह की अश्लीलता की शिक्षा भी दे देता।

प्यारेलाल जैसे लड़के बचपन में ही माँ-बाप के नियंत्रण से बाहर हो जाते है और बिगड़ जाते हैं। मगर खुद के साथ औरों को भी बिगाड ने की शिक्षा देते हैं। जैसे प्यारेलाल उसका कहना किसी लड़के ने मानने से इन्कार कर दिया तो उसे बूरी तरह से पीट देता। और अपने नियंत्रन में ले लेता।

२७) <u>चाचा फकीरचन्द</u> --

उपेन्द्रनाथ "अश्क" जी ने चाचा फकीरचन्द का चरित्र-चित्रण किया है - जो बायीं आँख में जरा सा ऐब होने के कारण शादी करने के लिए जिन्दगी से कितना बड़ा समझौता करना पड़ा हैं।

चाचा फकीरचन्द का वर्णन कुछ इस प्रकार हैं - मँझला कद, दोहरा बदन, उटंग पायजामा; चेहरे पर जरा सी बड़ी दाढ़ी; सिर पर छोटे-छोटे खिचडी बाल; मोटे होंट और बायीं आँख में बड़ी-सी फूली।

चाचा फकीरचन्द पं॰ शादीराम के अच्छे दोस्तों में से एक हैं। स्वभाव भी उनका अच्छा हैं। जिसका खाते है उसका गुण गाते हैं। और मूशीबत के समय उसके मदद को भी जाते हैं। पर इन सब गुणों के बावजुद चाचा जी के बायी आँख में बडी-सी फूली होने के कारण उमर के चालिस साल तक उनकी शादी नहीं हो पाती। मगर एक दिन उनके जिगरी दोस्त पं. शादीराम उनके लिए एक रिश्ता लेकर आते है - जो लड़की ने कुँवारे पन में ही माता बनने की गलती की हैं। और उस लड़की के पिता किसी जरूरत मन्द के खोज में है ऐसी ही खबर पं॰शादीराम को मिलते ही वह अपने भाई समान दोस्त चाचा फकीरचन्द के लिए उस लड़की का रिश्ता तय

करते हैं। उसे बच्चा होते ही उस बच्चे को अनाथालय भेज कर उस लड़की को दुल्हन बनाकर चाचा फकीरचन्द के साथ जालन्धर भेज देते हैं।

नायक चेतन भी चाची की सुन्दरता देखकर अचर्य चकीत होता है और अपनी माँ से पुछता है कि चाचा फकीरचन्द को इसी उमर में इतनी सुन्दर पत्नी कैसे मिली ? तो माँ बताती है कि कुंवारी माता बनने के कारण और यह भी बताती है कि ऐसी फिर - निकलियाँ घर में कम ही टिकती हैं। मगर चाचा के पत्नी ने यह बात साफ गलत साबित कर दी।

अश्क जी ने चाचा फकीरचन्द जैसे गुणी व्यक्ति को भी थोडे से ऐब के कारण किस प्रकार का समझौता करना पड़ता है यह चाचा फकीरचन्द के माध्यम से दिया हैं।

२८) चौधरी गुज्जरमल --

उपेन्द्रनाथ "अश्क" जी ने चौधरी गुज्जरमल के द्वारा शादी से पहले शराबी और आवारगी करते घूमने वाला और शादी होते ही अपनी घर-गृहस्थी में लगकर सब छोड़ सुधर जानेवाले दोस्त का उदाहरण दिया हैं।

चौधरी गुज्जरमल लम्बे-ऊँचे, गोरे-चिट्टे, हृष्ट-पुष्ट, ताकतवार पहलवान थे। उनका देवी तालाब पर आखाडा था। बडे बाजार में सर्राफे की दुकान थी। लेकिन दुकान पर अपनेसे पहले और दुकान बन्द करने के बाद दोनों वक्त चौधरी गुज्जरमल आखाडे जाते थे।

चौधरी गुज्जरमल शादी से पहले पं॰शादीराम के गुण्डा-पार्टी के महत्वपूर्ण सदस्य थे। शादीराम जब भी जालंधर आते तो उनके पार्टी में सभी दोस्तों के साथ चौधरी गुज्जरमल भी होते। शराब पीते और मौज-मजा करते। और शादीहोने के बाद गुज्जरमल सब आवारा धंदे छोड़कर दुकान और घर-गृहस्थी में लग जाते हैं। और पं॰शादीराम को भी हमेशा नेक सलाह देते है।

देते समय पण्डित जी उनको गालियाँ देते। तो गुज्जरमल कभी बूरा न मानते थे। जब भी कभी पं॰शादीराम की पत्नी उन्हें संकट के समय आवाज देती तो पण्डित जी के गालियों को बूरा न मानते हुए चले आते।

अश्क जी ने चौधरी गुज्जरमल के चरित्र-चित्रण में यह बताया है कि शादी के पहले सब कुछ करते हुए भी शादी के बाद सभी लतों को छोड़ कर अपने संसार में लग जानेवाले और हमेशा दुसरों को नेक सलाह देनेवाले गुज्जरमल का चरित्र-चित्रण किया हैं।

२९) देसराज --

देसराज यह रिटायर्ड सब-जज का वही पुत्र और चेतन के पिता का अभिन्न-हृदय मित्र था, जिसने उन्हें उस "तरल जीवन" का (चेतन के पिता शराब को यही नाम दिया करते थे।) रसास्वादन करने में सहायता दी थी और उसके बाद भी इस"पुण्य-कार्य में उनका हाथ बटाते रहने के महान कर्तव्य को, कभी-कभी केवल उनका मान रखने के हेतु" जिसे अपने उपर ले लिया था।"[१]

देसराज चेतन के पिता का बचपन का मित्र हैं। और दोनों साथ-साथ पढ़ा करते थे। देसराज के पिता सब-जज थे। खाने पीने वाले आदमी थे। बचपन में देसराज और पं॰शादीराम पहले पहले शराब को शक्ति-वर्धक औषधी समझकर पीने लगे। जो देसराज के पिता पीते थे और वे बलिष्ठ आदमी थे। देसराज और चेतन के पिता की यह समझ थी कि यही शराब पीने के वजह से ही देसराज के पिता बलिष्ठ बन गये थे। यही कल्पना करके ही देसराज और पं॰शादीराम जज साहब की शराब चोरी से पीने लगे। जो वे घर पर ही लाकर पीते थे।

देसराज के पिता ने बेईमानी से जजी करके बहुत धन कमाया था। एक विधवा पागल जो उन्हीं के ही कृपा से अपना दीवानी मुकदमा हार गयी थी,

---

१ "उपेंद्रनाथ अश्क : गिरती दीवारें" - पृष्ठ १२०।

उन्हें प्रायः भरे बाजार में गालियाँ दिया करती थी। यही नीचता देसराज के भी खून में आ गयी थी।

देसराज अपने सब-जज पिता के मृत्यु से पहले, उनकी कृपा से, देसराज एक बैंक में मैनेजर हो गया था। मगर बाद जब बैंक से एक भारी रकम के गबन के अभियोग में उसे त्याग पत्र देना पड़ा था। और घर आ बैठा तो सूद द्वारा या जुआ खेलकर अथवा ऐसे और कई संदिग्ध साधनों से वह रुपया कमाने लगा था। मित्रों को सूद से रुपये देता और वहीं रुपयों की उन्हीं मित्रों से शराब पीता।

देसराज अपनी ही लडकी से बच्च पैदा करता है और पुलिस को खबर होते ही रुपया देकर उनका मुँह बन्द कर देता हैं। और पलायन करता हैं। बाहर जाकर उस लड़की को किसी योग्य, लेकिन जरूरत मन्द वर के हाथ सौंप देता हैं। दो वर्ष बाद तीर्थ यात्रा धम-धाम से कर फिर वापस आ जाता हैं, तो किसी के सामने आँख झुकाता नहीं की किसी से मुँह छिपाता नहीं। ऐसे जैसे कुछ हुआ ही नहीं। देसराज यह पात्र हर प्रकार से नीच पात्र हैं। उसमें नीचता की कोई सीमा नहीं हैं।

३०) लाला गोविन्दराम —

उपेन्द्रनाथ "अश्क" जी ने लाला गोविन्दराम के माध्यम से राजनीतिक यथार्थ का चित्रन किया हैं। लाला गोविन्दराम और उनकी सच्ची देश भक्ति का चरित्र अंकन यथार्थ रूप में बड़ा प्रभावी हुआ हैं। अश्क जी को यहां पूर्ण रूप से सफलता मिली हैं।

लाला गोविन्दराम का कद लम्बा था, मगर झुके हुए कंधो के फलस्वरूप पीठ पर बन जाने वाले कुबड के कारण मँझला-सा लगता था; साँवला तीखा चेहरा, लम्बी नाक, पिचके कल्ले, शरीर पर बटन-खुला अचकन, खादी का चूड़ीदार पायजामा और सिर पर गांधी टोपी।

लाला गोविन्दराम का स्टैम्प मेकर एण्ड एंग्रेवर का व्यवसाय था। लाला गोविन्दराम सच्चे देश भक्त थे। और गोविन्दराम व्यवसाय के साथ-साथ कांग्रेस के आंदोलनों में अपने-आप को पूर्ण रूप से झोंक दिया था। जब भी गुजरात, महाराष्ट्र या मध्य भारत में राजनीतिक आंदोलन का बिगुल बजता, इधर अपने औजार-पौजार छोड कर लाला गोविन्दराम उठ खड़े होते और फिर ग्राहकों और ब्लॉकों को भूलकर गली-गली, मुहल्ले-मुहल्ले जलसों और जुलूसों का प्रबंध करते घूमते। वे वक्ताओं और स्वयं- सेवकों के घरों में जाकर उन्हें एकत्र किया करते। उन्होंने हजारों सभाओं का आयोजन किया था। मगर उन्होंने एक भी सभा में खड़ा होकर भाषण न दिया था। भाषण की कला से लाला गोविन्दराम अनभिज्ञ ही थे।

सभाओं को सफलता से आयोजित करने की क्षमता से कहीं ज्यादा बड़ा एक दूसरा गुण उनके यहां था। उनका स्वदेश प्रेम असंदिग्ध और उनकी कर्मठता और कर्तव्यनिष्ठा अद्वितीय थी। जब भी कोई बात उनके मन में आती तो वे उसे पूरा किए बिना पीछे न हटते। आंदोलनों के दिनों में बीसियों बार उन्होंने धरने दिये, पिकेटिंग की और दस साल में ग्यारह बार जेल गये।

इक्कीस के आंदोलन में लाला गोविन्दराम का नाम शहर के बच्चे-बच्चे के जबान पर था। महात्मा गांधी का जुलूस निकलने वाला था और "बक" नाम का एक बड़ा ही क्रूर अंगेज जिलाधीश था। उसने सिविल लाइन्स में कचहरी के आगे से जुलूस ले जाने पर मना किया था। लेकिन जुलूस कचहरी के सामने से ही गुजरा बडी भीड के साथ। इतने बडे भीड के लिए अधिकारी तय्यार न थे। महात्मा जी की कार निकल गयी, पर बाकियों पर बक ने डण्डे बरसवा दिये। लाला गोविन्दराम ने ऐन कचहरी के आगे पहली बार धरना दिया। उन्हें बडी बेदर्दी से पीटा गया और घसीट कर पुलिस गाडी में डाल कर ले जाया गया। रात को महात्मा गांधी ने भरी सभा में लाला गोविन्दराम की निष्ठा और कर्तव्य की प्रशंसा की। गांधी जी के चले जाने के बाद बक ने सभा को गैर कानूनी करार दे दी। और लाठी चलाने का आदेश दे दिया तो लोगों ने महात्मा गांधी के साथ लाला गोविन्दराम के जय के घोष से आसमान गुंजा दिया।

लाला गोविन्दराम का एक दूसरा किस्सा बताया गया है, जब विदेशी कपडे के बाय काट के दिनों में जब एक के बाद एक सब स्वयं - सेवक भवानिया राम नामक सुनार के घर जाकर कपडे मांगकर थक गये लेकिन उसने कपडा देने से इन्कार कर दिया तो स्वयं लाला गोविन्दराम भवानिया सुनार के यहां जाकर उसे विनंती पूर्वक मगर कुछ आदेश पूर्ण भाषा में सर की पगडी माँगी मगर सुनार ने देने से इन्कार कर दिया तो लाला गोविन्दराम ने प्रण ही किया कि वे पगडी लेकर ही यहाँ से जायेंगे और सूरज की ओर मुँह करके एक पैर पर जाने कितनी देर खडे हो गये और उनका वह रूप देखकर आखिर सुनार ने उनके सामने हथियार डाल दिया। सर की पगडी उतार कर उनके चरणों में रख दी। यहाँ लाला गोविन्दराम की सबसे बडी विजय हो गयी।

महात्मा गांधी और सरकार में समझौता हो गया और असेम्बली में जाकर सरकार के साथ लडने की तैयारियाँ हो रही थीं। चुनाव के लिए जालंधर से किसे खडा किया जाय इस पर बहस हो रही थी और लाला गोविन्दराम के साथी लोग उन्हें चुनाव लडने की सलाह दे रहे थे। और लाला गोविंन्दराम भी तैयार हो गये। मगर उनकी एक कमजोरी यही थी कि वे सभा का आयोजन तो सफलता पूर्ण रूप से करते थे मगर उन्हें बोलने नहीं आता था। यहीं लाला गोविन्दराम की सबसे बडी कमजोरी थी। मगर लाला गोविंन्दराम फिर भी चुनाव लडने के लिए तैयार हो गये थे।

अंत में लाला गोविन्दराम को टिकट न मिलकर सेठ हरदर्शन नामक सेठ को टिकट मिल जाता हैं। सेठ जी के पास बहुत पैसा था। जिस सेठ जी ने न तो कभी आंदोलन में भाग लिया है और न ही कभी जेल गया था। मगर रुपयों के बल पर लाला गोविन्दराम जैसे सच्चे देश भक्त को सेठ जी और उनके रुपयों के सामने हार खानी पडती हैं। यहां अश्क जी ने बताया है कि तुम्हारे पास पैसा हो तो तुम सब कुछ खरीद सकते हो। तुम्हारी दयानतदारी, देश भक्ति, त्याग आदि कौडी मोल भी कोई नहीं पुछता पैसा ही सब कुछ जादू हैं। पैसों के बल पर तुम जैसे चाहो वैसा मन-माना राज कर सकते हों।

३१) श्री लाल नारायण गुप्त --

लाल नारायण गुप्त उर्फ लालू यह चेतन का सहपाठी था। लालू मा-बाप की इकलौती संतान थी। लाड-प्यार में पला था। पढने में एकदम फिसड्डी था। परिक्षा में जब फेल हुआ तो घर से भाग गया। जब घर से भागा तो बनियों की गली ही नहीं आस-पास के मुहल्लों में तक कोहराम मचा था। ज्योतिष देखा गया ग्रहों की शांति की गयी। चारों ओर पहचान के लोगों को खबर पहुँचा दी गयी। अंत में वह लुधियाना के एक हलवाई की दुकान पर बर्तन मलता पाया गया। जब घर लाया गया तो पिता ने पत्नी का गौना करा लाने का आदेश दे दिया। जब पत्नी को लेकर जालंधर आ रहा था तो गाडी सिगनल के बाहर अड्डा होशियारपुर वाले फाटक पर रुक गयी तो लालू ने पत्नी को उतरने का आदेश दे दिया। गहने का बक्सा भी दे दिया और जब वह दूसरा सामन लेकर उतरने लगा तो गाडी ने सिटी दी और चली पडी। लालू स्टेशन से सिधे घर आया और माँ से पत्नी घर आयी क्या ? पुछा तो माँ सिर पटक कर सारा मुहल्ला एक कर दिया तब सब लोगों ने ढूँढ कर बीवी को खोज निकाला मगर एक बदमाश ने पत्नी के सभी गहने और गहनों का बक्सा भी लेकर भाग गया था। तब से सभी लोग उसे कद्दू के नाम से पुकार ने लगे।

मगर यह लालू सिगरेट की एजेन्सी लेकर पूरा हिन्दुस्थान घूम आया। पैसा भी खूब कमाया लेकिन शक्ल-सुरत और आचार-व्यवहार से शक होता था कि क्या यह एक आँख में किचड जमा और आस्तीन से नाक पोछने वाला लालू यह सब कर सकता हैं ? और एक दिन तीसरा नाम भी मिल गया लाल बादशाह। यह लाल बादशाह देखने वाले के मन में ईर्ष्या के भाव पैदा करने में ठीक दिन सफल हो गया।

३२) धर्मचन्द --

उपेन्द्रनाथ "अश्क" जी ने धर्मचन्द और उसके आई तथा वंश और उनके वंश की कलंक भरी कहानी बतायी हैं। इसी कलंक के कारण धर्मचन्द का ब्याह

जल्दी नहीं हो पाया। जब चालिस-बयालिस को हुआ तो शादी के आठ बरस बाद दमा और क्षय के बीमारी में मृत्यु हो गयी।

धर्मचन्द पतला - छरहरा बदन, रंग सावला, स्वभाव से क्रूर; गंभीर और चुपीते। बचपन में पिता की मृत्यु के कारण बडे भाई का ब्याह होने के बाद माँ और बडे भाई से अलग होकर मँझले भाई के साथ रहने लगे। मँझले भाई के ब्याह के दो साल बाद उनकी मृत्यु हो गयी तब मँझली भाभी और छोटे भाई मुकन्दीलाल के साथ रहने लगे, स्वयं दुकान का बोझ अपने कंधे पर ले लिया। घर में मँझली भाभी शन्नो और मुकन्दीलाल शारीरीक संबंध आ जाने से विधिवा शन्नो माँ बनी और खानदान में कलंक लग जाने के कारण उमर के चालिस-बयालिस साल तक कुंवारे बने रहे। बाद भागो अर्फ भागवन्ती नामक पहाडी युवती से पैसे देकर शादी होती है, जिसकी उम्र बीस-बाईस की होती है। ब्याह के बाद पत्नी के अधीन हो गये और भाई-भाभी से अलग हो गये। शादी के बाद आठ साल तक जीवित रहें। आठ साल में दो बच्चों के पिता बन गये। अंत में जान लेवा खांसी लगी और उसी में ही एक रात मृत्यु हो गयी।

अश्क जी ने सामाजिक यथार्थ का यहां स्पष्ट चित्रन किया हैं। समाज में किस तरह का अनैतिक बर्बरता का राज चलता हैं। विधवा होने पर किस प्रकार विधवा को अपनी विधवा होनी की सजा अपनों और परायों से भुगतनी पडती हैं। और उसके कलंक लग जाने से उसी घर के निष्कलंक व्यक्ति को भी उसकी सजा किस प्रकार मिलती है, यहां अश्क जी ने बताया हैं।

३३) <u>लाला मुकन्दीलाल</u> —

उपेन्द्रनाथ "अश्क" जी ने लाला मुकन्दीलाल का चरित्र-चित्रण करके समाज में किस तरह के भेडिये होते है और वह उचित-अनुचित का ख्याल किये बीना अपनी हो या परायी विधवाओं को किस प्रकार छलते है और बर्बाद करते है या एक बार नीचता के खाई में गिर जाने के बाद उठने के बजाय निरंतर गिरते ही चले जाते है और समाज में धब्बा या दाग बनकर खुद जीते है और उसकी सजा अपनों को

तक देते है इसकी मिसाल के रूप में मुकन्दीलाल का चरित्र-चित्रण किया हैं।

लाला मुकन्दीलाल का पतला-छरहरा, गठा हुआ शरीर, पतली कमर; चौडा सीन, दुध-सा गोरा रंग और लाल सुनहरे बाल। लाला मुकन्दीलाल बचपन से ही आलाडे जाते। चारों भाईयों में सबसे छोटे और उनके सिर पर मौज-मस्ती उडाते। बडे भाई का ब्याह होने के बाद घर में बेबनाव माँ और बडे भाई से अलग होकर अपने दोनों मँझले भाईयों के साथ रहने लगे। बडे मँझले भाई की मृत्यु हो जाने के बाद दूसरे भाई धर्मचन्द को दुकान सौंपकर मुकन्दीलाल घर का काम-काज देखने के बहाने भाभी शन्नों के साथ शरीर संबंध और विधवा भाभी को बच्चा होने के कारण खानदान में कलंक लग जाना और उसी भाभी के साथ ब्याह हो जाना मगर उसकी सजा भाई धर्मचन्द को मिलना। धर्मचन्द की मृत्यु के बाद उसकी पत्नी विधवा भागों पर डोरे डालना।

एक प्रकार से अश्क जी ने लाला मुकन्दीलाल का चरित्र-चित्रण करके समाज के एक नीच, पशु और अधम पुरुष का चित्रांकन किया है। समाज में लाला मुकन्दी लाल जैसे पशु होते है इसका यथार्थ दर्शन होता हैं।

३४) <u>शन्नो</u> --

अश्क जी ने शन्नो का चरित्र-चित्रण वर्णनात्मक ढंग से किया हैं। शन्नो अपने पति के होते हुए भी अपने छोटे देवर मुकन्दीलाल पर डोरे डालती है और पति के मृत्यु के बाद उस कुँवारे देवर के बच्चे की माँ बनकर बाद उसकी ब्याहता बन बैठती हैं।

शन्नो का रंग गोरा-चिट्टा, सरो-सी लम्बी, साँचे में ढला बदन, उस पर दगदगाते रूप की आभा में जगमगाती, उस पर भरी जवानी का खुमार था। पति के होते हुए भी अपने छोटे, कुँवारे और सुन्दर देवर पर डोरे डालती हैं। पति की मृत्यु के बाद उसी देवर के बच्चे की माँ बन जाती हैं। इसी कारण पूरे खानदान में कलंक लगाने का काम करती हैं। मगर समाज में फिर भी उँची नाक लिए घूमती हैं। साधु-सन्तों के संगत में समाज के आम स्त्रीयों की तरह खुद भी आ जाती हैं।

जाँघ का घाव लिए बडे तेवर के साथ सब पर रौब जमाने का काम करती हैं। देवर तथा पति मुकन्दीलाल अपनी विधवा भाभी भागों के साथ संबंध रखता है तो खुले आम पति और जेठानी पर बरस पडती हैं। जब जेठानी मुहल्ले के ही ब्राह्मण तेलू के साथ भाग जाती है तो नाक कटा गयी का आरोप करके जेठानी के विरुद्ध जातिवालों को भडकाने का काम करती है और ब्राह्मणों पर व्यंग्य और गलियों की बौछार करती हैं। शन्नो एक प्रकार से छली पात्र हैं।

अश्क जी ने यहाँ यह बताया है कि खुद कलंकीत होते हुए भी दूसरों पर ताने कसने और कलंकीत होने का आरोप करना भी कितना हस्यास्पद हैं। इसका उदाहरण शन्नों ही हैं।

३५) वीरसेन --

अश्क जी ने वीरसेन का चरित्र-चित्रण वर्णनात्मक ढंग से किया हैं। वीरसेन के राजनीतिक यथार्थवादी मौलिक विचार प्रकट किये हैं।

वीरसेन बहुत बढिया कपडे पहनते। हमेशा कमीज-पतलून पहने रहते, पर उनकी कमीज कालर विहीन होती और दूर से वे किसी देशी पादरी-से लगते। रँग साँवला था। नक्श तीखे थे। होंट पतले थे। शरीर से एकदम दुबले-पतले थे। वीरसेन को देखकर शक हो जाता कि यह आदमी बीवी रख सकता है और बच्चा भी पैदा कर सकता हैं ?

वीरसेन काम कुछ करते नहीं थे। उनके दोनों भाइयों ने उनको आराम करने और सेहत बनाने की सलाह दी थी मगर उनका ज्यादा ध्यान सेहत के बजाय राजनीति में था। उनका काँग्रेस पर विश्वास न था। उनका पूरा विश्वास स्तू की तरह हिंस्त्र क्रांती और राजसत्ता गरिबों और मजदूरों के हाथ में आयी हैं। वीरसेन का ख्याल था कि अगर ऐसा हुआ तो सचमुच इस देश से गरीबी, भुखमरी, बेरोजगारी, अशिक्षा और गुलामी हमेशा के लिए मिट जायगी। मगर काँग्रेसी बनिया है और अंग्रेज भी बनिया हैं। अंग्रेजों के बाद राजनीति की डोर काँग्रेस

सम्भालेगी तो एक बनिया का सौदा दूसरे बनिया से होगा अगर ऐसा हुआ तो न देश में क्रांति आयेगी और न बेरोजगारी, भूखमरी और गुलामी कभी नहीं हटेगी। अगर यह सब कुछ करना है तो रूस की तरह हिंस्र क्रांति ही इसके लिए एकमेव उपाय हैं।

वीरसेन के भाई वीरसेन के इसी क्रांतिकारी विचारों से घबराते है और उन्होंने वीरसेन को इसी विचारों से दूर रखने के लिए सेहत के नाम पर एक प्रकार की कैद ही की हैं।

३६) सेठ हरदर्शन --

अश्क जी ने सेठ हरदर्शन के माध्यम से राजनीति और उनकी चालों पर गहरा व्यंग्य कसा हैं। जो सच्ची सेवा करता है मगर धनहीन है और जो कांग्रेस के लिए कुछ भी कार्य न करते हुए भी केवल धन के बल पर सेठ हरदर्शन जैसे लोग लाला गोविन्दराम जैसे देश प्रेमी और सच्चे सेवकों को हटाकर ऐन वक्त किस तरह बाजी मारते हैं, इसका यहां जीवित उदाहरण अश्क जी ने दिया हैं। कोई भी पक्ष हो केवल सेवा को महत्व ने देकर धन के महत्व देता हैं। धन के बल पर ही गन्दी चालें चलकर भ्रष्ट मार्ग को अपना कर सत्ता प्राप्त करता हैं। सच्चा सेवक धन की कमी के कारण दुध में गिरी हुई मक्खी के तरह उठाकर फेंक दिया जाता हैं।

सेठ हरदर्शन पहले सिल्क की कमीज, लट्ठे के चूडीदार पायजामे, सिल्क के अचकन और टोपी पहनते थे। मगर अब उन्होंने अपनी वेशभूषा में परिवर्तन कर दूध-सी सफेद, बारीक खादी का कुर्ता और चूडीदार पायजामा, खादी ही का अचकन और सिर पर गांधी टोपी।

सेठ हरदर्शन की कोशिश लाला गोविन्दराम जैसे सच्चे सेवक को धन के बल पर अपने रास्ते से हटाकर अपना उल्लू सीधा करना। राजनीति में ऐसा ही होता हैं। जो सच्ची सेवा करता है उसे हटाकर गुण्डे, तस्कर, सेठ-साहुकार लोग ही टिकट खरीदकर चुनाव जीतते है और बेपनाह धन कमाते हैं। आज-कल

राजनीति गुण्डा-गर्दी, भ्रष्टनीति और रिश्वत खोरी का आखाडा ही बन गया है। धन के बल पर मन-मानी कैसी भी की जा सकती है इसका इससे अच्छा उदाहरण और क्या हो सकता है ?

३७) पण्डित राधारमण एडवोकेट —

अश्क जी ने पं॰ राधारमण एडवोकेट, का चरित्र-चित्रण वर्णनात्मक ढंग से किया है। जो पिता की काफी सम्पत्ति मिल जाने पर और खुद की भी आमदानी अच्छी होते हुए भी शेयर बाजार के चक्कर में पडकर ज्यादा धन कमाने के लालसा के कारण दीवालिया होकर और सभी जायदाद ऋणदाताओं की भेट करके और शहर छोड़कर दूसरे शहर में भाग जाने का किस्सा बताया है।

पं॰ राधारमण एडवोकेट रंग से गोरे-चिट्टे थे; तनिक अन्दर को धसे कल्ले, बडी-बडी किंचित नीचे को झुकी मूँछे, अचकन, चुडीदार पायजामा और सिर पर बडी-सी पगडी। उमर चालिस के आस-पास।

पं॰ राधारमण एडवोकेट शहर के धनी-मानियों में गिने जाते थे। उनके पिताजी काफी सम्पत्ति छोड़ गये थे। और स्वयं भी शहर के प्रसिध्द एडवोकेट थे। उन्होंने नगर पालिका के चुनाव में खूब रुपया खर्च किया था और उनका इतना प्रचार हुआ था कि शहर का बच्चा उनके नाम से परिचित हो गया था। चुनाव जीतने पर उनका इतना बडा जुलूस निकला था कि उसकी तुलना महात्मा गांधी के जुलूस के साथ की जाने लगी थी। पं॰राधारमण एडवोकेट कमेटी के प्रधान भी चुने गये थे। मगर इसी दौरान उन्हें रूई के शेयर खरिदने का चस्का लगा और बहुत बडा घाटा हो जाने के कारण उन्हें शहर छोडकर भाग जाने पर विवश होना पडा। जायदाद ऋणदाताओं को भेट करके लाहौर चले गये और वही जाकर प्रैक्टिस करने पर मजबूर हो गये। एक होशियार और धनवान का जुआरी बन जानेपर अंजाम क्या होता यह यहाँ अश्क जी ने पं॰राधारमण एडवोकेट के माध्यम से बताया है।

३८) लाला अमरनाथ --

अश्क जी ने लाला अमरनाथ का चरित्र-चित्रण वर्णनात्मक ढंग से करते हुए अमरनाथ जैसे जिद्दी और परिश्रमी जो संकटों से जूझकर पुस्तक विक्रेता के व्यवसाय में अपना जम बिठाता है और प्रसिध्द पुस्तक विक्रेता बन जाता हैं। इसके साथ-साथ पुस्तक-विक्रेताओं के सामने आनेवाली उलझनों का भी चित्रण यहां हो गया हैं। किस प्रकार पुस्तकों के क्रय-विक्रय के लिए नये-नये ढंगो की विज्ञापनबाजी करनी पडती हैं। और जो विक्रेता इसी कला में तरबेज है वही इसमें सफलता पाता हैं। किस प्रकार की सर्कस पुस्तक विक्रेताओं को करनी पडती है यह बताया गया हैं।

लाला अमरनाथ मँझले कद का, चौडा माथा चौडा मुख, चौडा-चकला शरीर और चौडे-चौडे हाथ-पाँव। पढने में न तेज न फिसड्डी। बचपन में एक किताब लिखकर उसे छपवाकर और उसे बेचने के लिए अमरनाथ को किस प्रकार से जूझना पडता है इससे अमरनाथ के इच्छा शक्ति का पता चल जाता हैं। पाँच रुपये से दुकान शुरू करता है और जम बिठाकर भैरों बाजार का प्रसिध्द पुस्तक-विक्रेता बन जाता हैं। अमरनाथ के पास विज्ञापन बाजी की कला हैं। इसके बल पर ही अमरनाथ यश पाता हैं। यह सब देखकर देखनेवालों के मन में भी ईर्ष्या के भाव जग जाते हैं।

लाला अमरनाथ के माध्यम से अश्क जी ने बताया है कि अगर सच्ची लगन हो, इच्छा-शक्ति और मेहनत के साथ आदमी क्या कुछ नहीं कर सकता ? मनुष्य में जूझने की शक्ति है तो उसकी नाव किनारे को लग पाती हैं। संघर्ष ही मनुष्य को सब कुछ सिखाता हैं।

३९) पं॰ शादीराम --

चेतन के पिता पं॰ शादीराम गठे हुए शरीर के पाँच फूट तीन इंच लम्बे शेखीले आदमी थे। मुख, घुटा हुआ सिर और बडी-बडी ऐसी मूँछे जिनकी नोके कानों तक पहुँचती थी। आँखों में नशेके कारण लाल-लाल डोरे और कडकती हुई

कर्कश आवाज-लडकपन हीसे न केवल पहले दर्जे के उदंड थे वरन् पक्के शराबी भी।[१]

चेतन के पिता पं॰शादीराम स्टेशन मास्टर थे। एक नंबर के शराबी जुआरी, वेश्या गमन करनेवाले दंबगई, फक्कड आदमी थे जो घर फूँक तमाशा देख के प्रवृत्तिवाले। बात-बात पर लडना। बीवी बच्चों पर आतंक जमाना। यार दोस्तों में पास का सबकुछ लुटाना। सिर पर ऋण का बोझ मगर फिर भी जिंदगी की ओर से बेफिक्री। बीवी बच्चों का क्या होगा इसका भी खयाल न रखना। कभी-कभी चेतन पूरा की पूरा उडना।

पं॰ शादीराम की माता की मृत्यु उनके तीन वर्ष की आयु में हो गयी थी। उनका पालन-पोषण चेतन की परदादी गंगादेई द्वारा हो गया था। चेतन के दादा पं॰सुखलाल पटवारी थे। जो हमेशा प्रांत के दौरे पर रहते। परदादी गंगादई धार्मिक वृत्ति की स्त्री थी जो पीर-फकीर, साधु-संत में विश्वास रखने वाली और हर धर्म के त्यौहार मनाने वाली स्त्री थी। पुरोहिताई को प्रत्येक ब्राह्मण का धर्म समझने वाली, उदंड और कर्कशा ब्राह्मणी थी। यह सब कर्तव्य निभाने में ही वह अपना समय लगा देती। बालक शादीराम की ओर कम ध्यान होने के कारण आवारा गुण्डा-गर्दी, मार-पीट, बुरी लतों में बचपन से ही माहिर हो गये। पिता और दादी के नियंत्रन से बाहर हो गये। नन्हीं -सी आयु ही में वह आखाडे जाता, लडाइयाँ करता और सिर फोडता-फोडवाला। होस्टल में आकर शादीराम और भी उदंड हो गये। पिता और दीदी के नियंत्रन से बाहर हो गये। बचपन में ही जल्दी आठवे दर्जे में विवाह कर दिया। इससे भी उनके सरगर्मियों में कमी नहीं आयी। विवाह की खुशी में अपने घनिष्ठ मित्र देसराज के घर पहली बार मदिरा का भी रसास्वादन किया। सिगरेट आदि वे पाँचवी कक्षा से ही पीते थे। इसी शराब की लत ने ही उनके जिन्दगी में सबसे बडी हानी पहुँचा दी।

पं॰ शादीराम क्रोधी भी थे जो बात-बात पर बीवी बच्चों को बडी निर्दयता से पीटा करते। बच्चे हमेशा सम्पर्क से दूर रहने का प्रयत्न करते। मगर जब भी मौके बसे हात आते पढाई के बहाने कठिन-से कठिन सवाल पुछते और जब

उत्तर गलत ही तो बडी निर्दयता से पीटते। चेतन तो कभी-कभी महिना तक बीमार रहता। बीवी बच्चों की कभी परवाह न करते, उनमें हमेशा धौंस जमाये रखना और उनके आशा-आकांशा का विचार किये बीना उन पर अपना निर्णय लादना। दूसरों के भावनाओं की कदर न करना। अपने ही धुन में मस्त रहना। कुछ अच्छे दोस्तों ने राय दी तो उनको भी गाली-गलोज करना। मुहल्लेवालों पर अपना धौंस जमाना। बात-बात पर लडने के लिए ललकारना। सूरमा बेटे पैदा होने की और उनके द्वारा बदला लेने की घोषणा कर देना। बच्चों को लडाई के सभी गुरू सिखाना। जब भी घर छुट्टी पर आना तो बाजार शेखों से होते हुए मदिरा का रसास्वादन करके मुहल्ले और घरवालों को मधुर वचन सुनाते आना। घर में प्रवेश करते ही मार-पीट का हंगामा मचाकर सुख-शांति को नष्ट करनें में ही बहादुरी समझते थे।

इस प्रकार अश्क जी ने "शहर में घूमता आईना" उपन्यास में नानाविध चरित्रों का यथार्थ चित्रण करता है, जो एक शहर को प्रतिबिंबित करता जाता हैं।

निष्कर्ष —

उपेन्दनाथ "अश्क" जी चरित्र-चित्रण की कला में सिध्दहस्त उपन्यासकार हैं। यद्यपि उन्होंने वर्णनात्मक प्रणाली को अपनाया है, फिर भी इस प्रणाली के द्वारा पात्रों के आंतर-बाह्य व्यक्तित्व पर प्रकाश डालने में पूरी सफलता पायी हैं। उनके पात्र समाज की जीती-जागती तस्वीरे हैं। सभी पात्र हाड मांस के हैं। उनके पात्र गिरते है तो उन्हें गिरने दिया गया है और जब विकास की ओर उन्मुख होते है तो उनके मार्ग में लेखक ने किसी भी प्रकार दखल अंदाजी नहीं की हैं। उनके पात्रों को हम यंत्र की भांति तेजी से घूमते हुए नहीं देखते और न ही देवगत विशेषताओं से परिपूर्ण हैं। बल्कि वे पृथ्वी पर चलते-फिरते मानव हैं जिनमें सामाजिक और व्यक्तिगत दुर्बलताएँ भी हैं। उनके पात्र समाजगत एवं वर्गगत परिस्थितियों के दुष्चक्र में प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप में फँसे हुए दिखायी देते हैं।

पात्रों में वातावरण एवं वंशानगत पायी जानेवाली कुण्ठाओं तथा वृत्तियों का प्रभाव दिखायी देता हैं। यथार्थवादी उपन्यासकारों की श्रेणी में प्रेमचंद को छोडकर अन्य किसी भी उपन्यासकार ने इतने पात्रों का सृजन अपने उपन्यासों में नहीं किया जितना "अश्क" ने अपने उपन्यासों में उस वर्ग को अपनाया जिसका क्षेत्र यथार्थ की भूमि में नितान्त अस्थिर, दुर्बल एवं कष्ट-साध्य सा दिखायी पडता हैं।

उपन्यास का नायक चेतन अपनी साली नीला का विवाह अधेड विधुर से होने के कारण मनशांति के लिए भटकाता हैं। मगर उसे कहीं भी शांति नहीं मिलती। वह आईना बनकर जिसके भी पास जाता है उसका चित्रण करता हैं। बद्दे से मिलकर उसका मैट्रीक पास होने का राज तथा उसकी माँ प्रसन्न कुमारी और उनकी सहेलियाँ। रामदित्ता और उसकी दुखभरी कहानी बताता हैं। पं.गुरदासराम जो एक अच्छे लठैत होने के बावजूद रामदित्ते के ब्याह में रोडा अटकाने के कारण उनका चरित्र मलीन हो जाता हैं। मित्र अनंत जो भोगवादी जिन्दगी जीने का कायल हैं। दीनानाथ जो जडिये का व्यवसाय छोडकर आनरेरी हकीम बनकर लोगों को ठगाता है और पकडा जाता हैं। कम उम्र में ब्याह होता है और आठ वर्ष में पाँच बच्चे पैदा करके परेशानियाँ मोल लेता हैं। कवि रामदास जो झूठी विज्ञापन बाजी करके अज्ञान युक्त युवकों को लूट रहा हैं। चुनीलाल और फल्गूराम जैसे पागल भी हैं। दौलतराम और देशराज जैसे लुच्चे और लंफगियों की भी कमी नहीं हैं। चाचा फकीरचन्द, हरलाल, चौधरी गुज्जरमल जैसे सच्चे दोस्त भी दिखायी देते हैं। कवि हुनर जो दूसरों के काव्य पर डाका डाल कर अपने आप को महान कवि समझकर दूसरों को उल्लू बनाते फिरता हैं। देबू, प्यार, जगना और बिल्ला जैसे गुण्डे भी है जो परिस्थितियों के कारण नामी गुण्डे बनकर अनजाने राहगीर कमजोर तथा छोट-मोटे व्यापारियों को सताते-लूटते फिरते हैं। लाला बाँकेराम और योगी जालंधरी मल जैसे पाखंडी भी हैं। लाला गोविन्दराम जैसे सच्चे देशभक्त है मगर सेठ हरदर्शन जैसे पूंजिपति उनको अपने राह से हटाते हैं। चेतन की माँ और चंदा जैसी धर्म परायण और पति को परमेश्वर मानकर पति का अत्याचार चुपचाप सहती हैं। लाल नारायण उर्फ लालू जो समाज से कद्दू याने बुध्द की उपाधि पाकर भी एक दिन बडा व्यापारी और सेठ बनकर दिखाता हैं। लाला अमरनाथ जो

विषम परिस्थितियों में श्रम और लगन से सफलता हासिल करता है। शन्नो जैसी व्याभिचारी स्त्री भी है जो पति के होते हुए सुन्दर देवर साथ व्यभिचार करती है और पति के मृत्यु के बाद उसकी होती हैं। भागो उर्फ भागवंती की कहानी करुणामय ही है बचपन तथा जवानी अभाव में बीती पति के मृत्यु के बाद दे देवर के वासना का शिकार और तेलू जैसे समवयस्क के साथ भाग जाती है तो अमीरचन्द जैसे सनातनी धर्मी लोगों के जुलूम और उत्पाचार का शिकार होती हैं। विधवाएँ व्यभिचारी है और साधू-सन्तो की संगती भी करती है मगर दिखावे के लिए पूजा-पाठ में लगा लेती है और अंत में जर्जर लोगों का शिकार बन जाती हैं। पं॰ शादीराम जो मार पीट और गुण्डा-गर्दी करना, शराब पीकर पत्नी तथा बच्चों को आतंकीत करना और अपने आप को शुर-वीर समझते हैं। सभी पात्र जिवंत और हाड मांस के हैं। सभी पात्रों के चरित्र-चित्रण में लेखक को पूर्ण सफलता मिली हैं।

"शहर में घूमता आईना" के पात्र हमें हमारे आस-पास के वातावरण में दिखायी देनेवाले पात्र हैं। इन्हीं पात्रों के कारण पाठक भी उनके निकटतम आना चाहता हैं। उनके सुख-दु:ख को अपना सुख-दुख समझकर सहानूभूति प्रदर्शित करता है और इसी अपनत्व के कारण लेखक अपनी कृति को सफल बना पाया हैं।

अश्क जी ने इस उपन्यास में समाज को व्यापक रूप को समग्रता से प्रस्तुत करने का प्रयास किया हैं। यद्यपि इस प्रयास में कथावस्तु में बिखराव आ जाता है किंतु यह बिखराव समाज में ही है। अत: अनेकानेक चरित्रों और समस्याओं को समेटता हुआ यह उपन्यास वर्तमान युग के मध्यमवर्गीय समाज को यथार्थ रूप में चित्रित करता हैं। यही इसकी सफलता, सार्थकता और समर्थता है।